फिलिप्पींस की सरकार द्वारा जनता पर जारी युद्ध
‘ओप्लान बयनिहान’ का विरोध करो!
जीत की राह पर आगे बढ़ रही
फिलिप्पीनी क्रांति की जय–जयकार!

फिलिप्पींस के क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थन में
22 से 28 अप्रैल 2013 तक भाईचारा सप्ताह मनाओ!

केन्द्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

फिलिप्पींस की कम्युनिस्ट पार्टी

नई जन सेना

फिलिप्पींस की सरकार द्वारा जनता पर जारी युद्ध
'ओप्लान बयनिहान' का विरोध करो!
जीत की राह पर आगे बढ़ रही फिलिप्पीनी क्रांति की जय–जयकार!
फिलिप्पींस के क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थन में 22 से 28 अप्रैल 2013 तक भाईचारा सप्ताह मनाओ!

(फिलिप्पींस की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में आगे बढ़ रही क्रांति का उन्मूलन करने के लक्ष्य से अमेरिकी दलाल बेनिग्नो अक्विनो की सरकार ने जनता पर फासीवादी युद्ध 'ओप्लान बयनिहान' छेड़ दिया जिसका मुकाबला नई जन सेना और जनता बहादुराना ढंग से कर रही हैं। 'ओप्लान बयनिहान' के खिलाफ तथा फिलिप्पीनी क्रांति के समर्थन में देश भर में भाईचारा सप्ताह मनाने के अवसर पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी यह पुस्तिका[1] जारी कर रही है ताकि फिलिप्पीनी क्रांतिकारी आंदोलन का संक्षेप में परिचय कराया जा सके।)

फिलिप्पींस दक्षिण–पूर्वी एशिया का एक छोटा सा देश है जिसका क्षेत्रफल तीन लाख वर्ग किलोमीटर है। यहां की आबादी लगभग साढ़े नौ करोड़ है। यहां की व्यवस्था अर्द्ध–औपनिवेशिक व अर्द्ध–सामंती है। यह देश 7,100 द्वीपों का समुदाय है जो प्रशासनिक तौर पर रीजियनों, प्राविन्सों, अधीकृत शहरों, शहरों, म्युनिसिपालिटियों और बारियों में बंटा हुआ है। फिलिप्पीनी जनता भाषाई, भौगोलिक व धार्मिक रूप से बंटी हुई है। यहां पर ईसाई और मुस्लिम धर्म प्रमुख हैं। चूंकि ईसाई फिलिप्पीनों की संख्या अत्यधिक है, इसलिए समाज में उनका हर तरीके से दबदबा है। मुसलमान फिलिप्पीनो जनता को मोरो या मोरो मुसलमान बुलाया जाता है। बड़े राष्ट्रीय व भाषाई अल्पसंख्यक ग्रुपों के हिसाब से इलोकना, इबानाग, कपम्पन्गान, टैगालाग, बिकोलानो, सेबुवानो, वरे, हिलिगेनान,

---

[1] इस पुस्तिका में दी गई सारी जानकारियां फिलिप्पींस की कम्युनिस्ट पार्टी के अधीकृत दस्तावेजों और पत्रिकाओं से ली गई थीं। अगर किसी शब्द का सही अर्थ नहीं आ रहा या अनुवाद में समस्या हो तो फिलिप्पींस के मूल दस्तावेजों को देखें।

तौसोग, मारानाव आदि हैं। फिलिप्पीनी जनता महान सांस्कृतिक धरोहर की धनी है। विदेशी दुराक्रमण और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ यहां की जनता ने लगातार और दृढ़ता से संघर्ष किया था। यहां की जनता का उज्ज्वल इतिहास है जिसकी शौर्यपूर्ण बलिदानों की परम्परा रही है। फिलिप्पींस एक समृद्ध देश है जहां पर स्वतंत्र रूप से विकसित होने के लिए तमाम जरूरी संसाधन मौजूद हैं। करोड़ों मेहनतकश जनता इस देश की नींव के रूप में खड़ी है जिसके आधार पर यह एक सम्पन्न, सार्वभौमिक, स्वतंत्र व जनवादी देश के रूप में रह सकता है। इस देश के मजदूर व किसान साम्राज्यवाद और दलाल शासकों के शोषण व उत्पीड़न का अंत कर समाज को बदलने के लिए एक प्रधान स्रोत हैं।

एक सदी पहले ही अमेरिका के हस्तक्षेप से फिलिप्पींस का समाज अर्द्ध–सामंती व अर्द्ध–उपनिवेशिक व्यवस्था के रूप में बदल गया जिसका विकास अवरुद्ध हो चुका है। देश अमेरिकी साम्राज्यवाद के प्रत्यक्ष शोषण व उत्पीड़न के तहत धकेल दिया गया। कृषि पर फिलिप्पीनी जनता की निर्भरता बहुत ज्यादा बढ़ गई। जोतने के लिए किसानों के पास जमीन नहीं है। वहां पर असली भूमि सुधार नहीं हुए।

मूलभूत धातुओं, रसायनों और वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उद्योगों के विकास हेतु बुनियादी सुविधाओं और अवसरों का अभाव है। इससे देश में औद्योगिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के विकसित होने की स्थिति नहीं रह गई। इससे वहां पर कुछ हल्का उत्पादन, विनिर्माण, जन सुविधाएं, खदानों से जुड़े उद्योग ही, वह भी साम्राज्यवादी बाजार पर आधारित होकर विकसित हो गए। कच्चे माल के निर्यात से तथा विदेशी कर्जों से प्राप्त विदेशी मुद्रा को खर्च कर साम्राज्यवादियों से ही मशीनरी और उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चे माल की खरीदनी पड़ रही है। इस तरह फिलिप्पींस साम्राज्यवादी देशों के उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करने वाला देश बनकर रह गया। साम्राज्यवादियों और उनकी छत्र–छाया में पले–बढ़े दलाल पूंजीपति वर्ग और बड़े सामंती वर्ग ने मिलकर राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को विकसित होने नहीं दिया। फलस्वरूप देश में पूंजीवादी विकास अवरुद्ध हो गया।

धीरे–धीरे अमेरिका की अतिरिक्त पूंजी फिलिप्पींस में आ गई। अमेरिका के साथ असमान विनिमय के चलते उसका वाणिज्य घाटा चरम पर पहुंच गया। इसे पाटने के लिए उसे विदेशों से और कर्जे उठाने पड़े। इस तरह अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने प्रत्यक्ष पूंजी के जरिए सूपर मुनाफे और परोक्ष पूंजी व कर्जों

के जरिए अधिक ब्याज निचोड़ लिए।

भूमण्डलीकरण के चलते बढ़ रही मुद्रास्फीति और आइएमएफ की सशर्त नीतियों के चलते देश की सम्प्रभुता मजाक बनकर रह गई। विदेशी कर्ज चुकाने के नाम पर 'आर्थिक सुधार' तेज हो गए जोकि विदेशी पूंजी के लिए अनुकूल हों। इस तरह फिलिप्पींस अमेरिकी साम्राज्यवादियों, आइएमएफ, विश्व बैंक तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के शिकंजे में फंस गया जोकि अभूतपूर्व है। दलाल बेनिग्नो अक्विनो की सरकार ने अमेरिका–निर्देशित नव उदारवादी नीतियों को अपनाकर सारे दरवाजे खोल दिए ताकि वे सभी किस्म की उपभेक्ता वस्तुओं, खासकर विलासिता की वस्तुओं को बेच सकें। इससे परम्परागत निर्यातों में और ज्यादा गिरावट आ गई जिससे स्थानीय उद्योग आर्थिक रूप से छटपटाने लगे हैं। देश की अर्थव्यवस्था कच्चे मालों और अर्द्ध–उत्पादित मालों के निर्यात पर निर्भर होने के कारण जनता के लिए मुसीबत बन गई।

देश की सम्प्रभुता और भौगोलिक समग्रता की गिरवी रखते हुए, क्लार्क, पम्पंगा, सुबिक और ज़ाम्बेल्स में अमेरिकी सैन्य बेसों को फिर से इस्तेमाल करने की अनुमति दे दी गई जिन्हें तानाशाह मार्कोस के पतन के बाद हटाया गया था। उसे वहां अपनी जंगी जहाजों को तैनात करने, सुबिक के पास अमेरिकी सब मरीन को तैनात करने, दक्षिणी चीन के समंदर के ऊपर अमेरिकी खुफिया जहाजों को उड़ने की अनुमति बेनिग्नो अक्विनो सरकार ने दे दी। फिलिप्पींस में अमेरिका की खुफिया गतिविधियां बढ़ रही हैं। न्यूयार्क पुलिस और फिलिप्पींस पुलिस के बीच हाल ही में हुआ करार देश में अमेरिका की दखलंदाजी को और ज्यादा बढ़ाती है। चूंकि अपनी पूर्ववर्ती दलाल सरकारों की तरह बेनिग्नो अक्विनो सरकार भी अमेरिकी साम्राज्यवादियों के हितों को पूरा करने के लिए जनता पर तीव्र हिंसा का प्रयोग कर रही है, इसलिए उसे उसके तीखे विरोध का भी सामना करना पड़ रहा है।

देश में बेरोजगारी दिन–ब–दिन बढ़ रही है जोकि आज 24 प्रतिशत तक पहुंच गई। प्रत्यक्ष व परोक्ष करों के कारण मजदूरों के वेतनों में गिरावट आ रही है। मजदूर, मुख्य रूप से महिलाएं काम के लिए बड़ी संख्या में विदेशों में पलायन कर रही हैं। इस तरह श्रम का सस्ता निर्यात हो रहा है। वहां पर उन्हें तीव्र शोषण का शिकार होना पड़ रहा है। विदेशों में काम के दूभर हालात के चलते और अत्याचारों का शिकार होकर हर दिन पांच मजदूरों की लाशें स्वदेश पहुंच रही हैं। विदेशी पूंजी को आकर्षित करने के लिए मजदूरों के अधिकारों पर हमला

बढ़ा है। कल्याणकारी योजनाओं पर सरकारी खर्च में कटौतियां जारी हैं। करों में रियायतें, ठेके और व्यापार में सभी किस्म की पूंजी का रास्ता साफ करना, निजीकरण, सट्टेबाजी, नियमों को हटाना, सरकारी उद्योगों का निजीकरण आदि के जरिए साम्राज्यवादी इजारेदारों और देश के इजारेदार पूंजीपतियों को लूटने–खसोटने तथा तेजी से मुनाफे बटोरने के और ज्यादा अवसर दिए जा रहे हैं।

सरकारी सुधारों के चलते कृषि भूमि लगातार विदेशी निगमों और बड़े दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों व बड़े जमींदारों के हाथों में चली जा रही है। गरीब किसानों व अल्पसंख्यक समुदायों से जमीन हड़पने के लिए सैनिक व पुलिसिया दमन अभियान चलाए जा रहे हैं। स्वैच्छिक रूप से जमीन बेचने की योजना की आड़ में बड़े जमींदार देश की सम्पत्ति को लूट रहे हैं। कृषि में अधिक किराया, लागत में बढ़ोत्तरी और महंगाई के कारण किसानों का जीवन दूभर हो गया।

अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को स्वायत्तता की दुहाई देते हुए ही उन्हें राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक आदि अहम क्षेत्रों में अधिकारों से वंचित किया गया। उनकी परम्परागत जमीनों और सम्पत्तियों को विदेशी निगम मनमाने तरीके से लूट रहे हैं।

प्राकृतिक संसाधनों का बेरोकटोक दोहन जारी है। निर्यात के लिए लकड़ी व्यापार, हद से ज्यादा मछली का शिकार और ओपेनकास्टिंग के चलते पर्यावरण को स्थाई नुकसान हो रहा है।

तमाम शोषित वर्गों के लोगों में भारी गुस्सा है क्योंकि उनके जीवन स्तर तथा काम के हालात में गिरावट आ गई है जिससे सामाजिक असमानता बढ़ रही है और रोजगार के अवसर घट रहे हैं। सामाजिक अशांति बढ़ रही है और तीखी हो रही है। दिन–ब–दिन तीव्रतर हो रहे आर्थिक व सामाजिक संकट का बेनिग्नो अक्विनो सरकार के पास कोई हल नहीं है।

प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों के बीच के अंतरविरोध भी हिंसात्मक तरीके से फूट पड़ रहे हैं। शासक वर्ग विभिन्न प्रतिस्पर्धी गिरोहों, निजी हथियारबंद गुटों के अलावा प्रतिक्रियावादी सेना, पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों के अंदर खुद के राजनीतिक व आपराधिक गिरोहों को पाल रहे हैं।

साम्राज्यवाद की सेवा में लगी फिलिप्पींस की अर्द्धउपनिवेशी व अर्द्धसामंती व्यवस्था दीर्घकालीन आर्थिक संकट में फंसकर विनाश की ओर बढ़ रही है

जबकि देश में बुनियादी अंतरविरोध तीखे हो रहे हैं। विश्व पूंजीवादी संकट का फिलिप्पींस पर आर्थिक व सामाजिक रूप से खासा प्रभाव है। यह संकट देश के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व नैतिक पतन व भ्रष्टाचार को उजागर कर रहा है। शासक वर्गों द्वारा साम्राज्यवाद की दलालखोरी का दिन–प्रतिदिन पर्दाफाश हो रहा है। बेनिग्नो अक्विनो सरकार अमेरिकी साम्राज्यवाद की वफादार कुत्ते की तरह सेवा कर रही है।

देश की सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था का विश्लेषण कर फिलिप्पींस की कम्युनिस्ट पार्टी ने यह निर्धारित किया कि साम्राज्यवाद, बड़ा सामंती वर्ग और बड़ा दलाल पूंजीपति वर्ग देश की जनता के तीन प्रधान दुश्मन हैं तथा इन्हें उखाड़ फेंककर देश की मुक्ति हासिल करनी है तो नई जनवादी क्रांति ही एक मात्र रास्ता है जिसकी धुरी है कृषि क्रांति। उसने घोषणा की कि इस प्रकार शोषणमूलक उत्पादन के सम्बन्ध खत्म हो जाएंगे और देश विकास की राह पकड़ेगा।

फिलिप्पींस कम्युनिस्ट पार्टी का आविर्भाव – विकासक्रम

18वीं सदी में स्पेइनी दुराक्रमणों और उपनिवेशी शासन के खिलाफ फिलिप्पीनो जनता ने सैकड़ों सशस्त्र विद्रोह किए थे। जनता के जबर्दस्त प्रतिरोध–संघर्ष के चलते स्पेइनियों को पूरे देश पर कब्जा जमाने में कभी सफलता नहीं मिली थी। दरअसल मिंडानावो व कोर्डिल्लेरास द्वीपों में एक बड़े हिस्से को बचाने में जनता विजयी हुई थी।

1896 में कटिपुनास की अगुवाई में राष्ट्रीय जनवादी क्रांति सफल हुई थी। इसे समूचे एशिया का सबसे पहला कामयाब उपनिवेश–विरोधी संघर्ष कहा जाता है। हालांकि 1899 में अमेरिकी दुराक्रमण के साथ ही फिलिप्पीनो जनता की राष्ट्रीय आजादी खत्म हो गई। अमेरिकी महा सैन्य शक्ति के खिलाफ फिलिप्पींस के मजदूरों व किसानों ने बहादुरी के साथ संघर्ष किया। 1896 की क्रांति में स्थानीय शोषक वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाला विघटनकारी इलसट्राडो नेतृत्व नए (अमेरिकी) उपनिवेशवादियों के सामने घुटने टेककर साम्राज्यवाद का दलाल बन गया।

1930 के दशक की शुरूआत में हुए हकबलहप्स (फिलिप्पीनो किसान समुदाय) के सामंतवाद–विरोधी विद्रोह में से फिलिप्पींस की कम्युनिस्ट पार्टी

(सीपीपी) का आविर्भाव हुआ। यही 'हक विद्रोह' के रूप में मशहूर हुआ था। कम्युनिस्ट पार्टी ने मजदूरों और किसानों के संगठन बनाकर आंदोलन का नेतृत्व किया। पार्टी के उदय के कुछ ही महीनों के अंदर अमेरिकी साम्राज्यवादियों और उनकी दलाल सरकार ने पार्टी और उसके नेतृत्व में काम करने वाले मजदूरों व किसानों के संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया। जन नेताओं को कैद किया। फिर भी जन प्रतिरोध नहीं थमा था। 1932 में फिलिप्पींस की समाजवादी पार्टी (एसपीपी) का उदय हुआ जिससे किसान आंदोलन को नई ताकत मिल गई। 1939 में सीपीपी और एसपीपी का एक ही पार्टी के रूप में विलय हुआ।

दूसरे विश्व युद्ध में फिलिप्पींस पर जापानी दुराक्रमण के खिलाफ जपान–विरोधी जनसेना का सीपीपी ने नेतृत्व किया। युद्ध में मिली पराजय के बाद जापान फिलिप्पींस से पीछे हट गया। अमेरिकी साम्राज्यवादियों की शह पर 4 जुलाई 1946 को झूठी आजादी मिली जिसके साथ ही, नाम के वास्ते फिलिप्पीनी गणराज्य का गठन हुआ। 1950 में एकीकृत पार्टी के नेतृत्व में हक (किसान) गुरिल्ला सेना ने सशस्त्र संघर्ष शुरू किया। अगस्त 1950 में हक गुरिल्ला यूनिटों ने मध्य लूजान द्वीप में 11 शहरों पर हमला कर बड़े पैमाने पर हथियार जब्त कर लिए। एक ओर पूर्वी यूरोप और चीन में कम्युनिस्टों के सत्ता पर काबिज होने और दूसरी ओर दक्षिण–पूर्वी देशों में क्रांतिकारी संघर्षों के उफान पर पहुंचने से खौफ खाए अमेरिकी साम्राज्यवाद ने 'कम्युनिस्ट भूत' का खात्मा करने के लिए कमर कस ली। उसने फिलिप्पींस की दलाल सरकार को बड़े पैमाने पर सैनिक सहायता पहुंचाई ताकि विकसित हो रहे कम्युनिस्ट हक विद्रोह का सफाया किया जा सके। 15 हजार गुरिल्ला सेना के साथ तीव्र रूप से जारी हक विद्रोह को कुचलने के लिए अमेरिकी साम्राज्यवादियों के पहले दलाल राष्ट्रपति रोक्जास ने किसान गुरिल्ला सेना और जन संगठनों पर प्रतिबंध लगाकर गुरिल्लों पर हमले छेड़ दिए। उसके बाद राष्ट्रपति बने क्विरिनो ने रामन मेगसेसे को, जिसने दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान–विरोधी गुरिल्ला युद्ध में कमाण्डर के रूप में ख्याति अर्जित की थी, रक्षा मंत्री (बाद में यह राष्ट्रपति भी बना था) के रूप में नियुक्त किया था। इसने हक विद्रोह को फासीवादी तरीके से कुचलने में अहम भूमिका निभाई। इसने ढोंगी सुधारों के जरिए हक विद्रोह को गुमराह करने की कोशिश की। पेंटागन (अमेरिकी रक्षा विभाग का मुख्यालय) और सीआइए के निर्देश में फिलिप्पीनी सेना को प्रशिक्षण देकर किसान विद्रोह के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। महत्वपूर्ण हक नेतृत्व की गिरफ्तारी और एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी में लावा नेतृत्व का दक्षिणपंथी दिशा अपनाए जाने से हक विद्रोह 1954 तक अस्थाई तौर

पर पराजित हो गया। कम्युनिस्ट पार्टी दक्षिणपंथी पार्टी में बदलने के फलस्वरूप हक गुरिल्ला सेना अपने कार्यभारों से विचलित हो गई।

पार्टी की पुनरस्थापना

1960 के दशक के दूसरे भाग में दुनिया के कई उपनिवेशी, अर्द्धउपनिवेशी और अर्द्धसामंती देशों में नई जनवादी क्रांतियों, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों और साम्राज्यवादी व पूंजीवादी देशों में (मजदूरों, छात्रों, नौजवानों, बुद्धिजीवियों, अमेरिका में अश्वेत लोगों, मानवाधिकारों, वियत्नाम पर अमेरिकी युद्ध का विरोध करने वाली ताकतों आदि) का नया क्रांतिकारी उभार सामने आया था। 1960 के दशक के दूसरे भाग में अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में टिटो, थोरे, टोग्लियाटी और कृश्चेव के आधुनिक संशोधनवादी गिरोहों के खिलाफ कामरेड माओ के नेतृत्व में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चलाए गए महान वितर्क और चीन में चली महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति ने दुनिया भर में प्रकम्पन पैदा किए थे। सहज ही, इसका प्रभाव फिलिप्पींस में सच्चे कम्युनिस्टों पर पड़ा था। इस परिस्थिति ने असली कम्युनिस्ट ताकतों को सीपीपी नेतृत्व की दक्षिणपंथी दिशा को ठुकराकर सही क्रांतिकारी दिशा अपनाने की प्रेरणा दी।

इसी प्रभाव से देश में 1960 के दशक में राष्ट्रीय जनवादी आंदोलन फिर एक बार जोर से उठा। अमेरिकी साम्राज्यवादियों, बड़े दलाल पूंजीपतियों और बड़े सामंती वर्गों के शोषण–उत्पीड़न के कारण देश की अर्थव्यवस्था में दिन–ब–दिन बढ़ते संकट के चलते जनता में असंतोष बढ़ा। नए–नए उभर रहे सर्वहारा के क्रांतिकारियों और पुरानी एकीकृत पार्टी के कुछ अनुभवी लोगों द्वारा किए गए प्रचार व सांगठनिक कार्य ने जल्द ही रंग लाया।

अमेरिकी दुराक्रमण के खिलाफ वियत्नामी जनता का महान संघर्ष, पिछड़े देशों में जारी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन, वियत्नाम पर अमेरिकी युद्ध के खिलाफ अमेरिका समेत दुनिया भर में फैला विरोध आंदोलन, पश्चिमी देशों और जापान में छात्र–बुद्धिजीवियों में बढ़ रहा रैडिकलिज्म आदि से देश में प्रगतिशील जन आंदोलन को प्रेरणा मिली।

राजधानी मनीला में और लूजान, विसयास, मिंडानावो आदि अन्य कस्बों में छात्र–बुद्धिजीवियों के बीच देशप्रेम आंदोलन पैदा हुआ। इस आंदोलन ने समान अधिकार, अमेरिकी सैन्य अड्डों को हटाने, खुदरा व्यापार का राष्ट्रीयकरण, वियत्नाम पर अमेरिकी दुराक्रमणकारी युद्ध में फिलिप्पींस की भूमिका आदि मुद्दों

को उठाया।

1960 के दशक के आखिर तक ढोंगी मजदूर नेताओं के आधिपत्य को ठुकराते हुए मजदूरों ने हड़तालें शुरू कीं। क्रांतिकारी मजदूर आंदोलन विकसित हुआ। साथ ही, ग्रामीण इलाके में जमीन पर अधिकार के लिए तथा जमींदारों के अत्याचारों के खिलाफ किसान संघर्ष विकसित हुआ। पुनरस्थापित कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सामंतवाद–विरोधी संघर्ष तेज हुआ जो कृषि क्रांतिकारी आंदोलन की दिशा में विकसित हुआ। भूमि अधिग्रहण, देशी व विदेशी पूंजीपतियों और उनके सशस्त्र गारदों की प्रताड़नाओं के खिलाफ अगसान, बुकिडनान, सुरिगाओ और मिंडानावो प्राविन्सों में लुमड अल्पसंख्यकों की सशस्त्र कार्रवाइयां तेज हुईं।

इसी क्रम में 26 दिसम्बर 1968 में सीपीपी की पुनरस्थापना हुई। राष्ट्रीय जनवादी क्रांति का संदेश व्यापक किसानों तक पहुंच गया। इसके तुरंत बाद, टारुक–सुमुलांग के अपराधी गिरोह के प्रभाव में रही पुरानी गुरिल्ला सेना के चंद क्रांतिकारी कमाण्डरों और योद्धाओं पर शहरों में जारी क्रांतिकारी प्रचार का असर पड़ा। वे क्रांतिकारी युवा संगठनों के सम्पर्क में आए थे जो बाद में नई पार्टी के सम्पर्क में आ गए। इस तरह पुरानी किसान गुरिल्ला सेना के बचे हुए तत्वों में से टूटकर आने वाले कुल 60 क्रांतिकारी कमाण्डरों और योद्धाओं के साथ, जिनके पास 9 स्वचालित रायफलें और 20 देशी हथियार थे, 29 मार्च 1969 को नई जन सेना (एनपीए) का गठन हुआ। तब तक टार्लान के दूसरे जिले में 80 हजार जनता के प्रत्यक्ष समर्थन और 50 हजार की सदस्यता से युक्त विभिन्न जन संगठनों में कार्यरत कुछ कार्यकर्ताओं, कुछ और पार्टी कैडरों और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समाजवादी आधारक्षेत्र के रूप में जन चीन के अलावा पार्टी के पास कुछ भी नहीं था। नए क्रांतिकारी नेतृत्व ने फिलिप्पीनो क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास के अनुभवों का संश्लेषण कर उसमें से अच्छे तत्व पर निर्भर होते हुए मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद को फिलिप्पीनी समाज के ठोस हालात में लागू किया। दिवालिया अर्द्धसामंती व अर्द्धउपनिवेशी व्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए पार्टी की साधारण राजनीतिक

नई जन सेना (एनपीए)

नीति, दीर्घकालीन जनयुद्ध की सामरिक नीति और कार्यनीति को तैयार किया। मजदूरों, किसानों, छात्रों, युवाओं, बुद्धिजीवियों, महिलाओं, राष्ट्रीयताओं और अल्पसंख्यकों को एकजुट और संगठित करने के लिए आवश्यक सामरिक रणनीति व कार्यनीति को तैयार किया। एनपीए को विकसित करते हुए विभिन्न क्रांतिकारी जनवादी जन संगठनों की स्थापना की ताकि फिलिप्पींस के राष्ट्रीय जनवादी मोर्चे (एनडीएफपी) का निर्माण किया जा सके। धीरे–धीरे नई जनवादी राजसत्ता के अंगों (जन कमेटियों) का निर्माण किया। ग्रामीण इलाके में क्रांतिकारी सशस्त्र संघर्ष, शहरों में क्रांतिकारी भूमिगत आंदोलन व कानूनी जन आंदोलन के लिए नींव डाली। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न माओवादी संगठनों और पार्टियों के साथ मिलकर विश्व समाजवादी क्रांति के लिए, सर्वहारा के अंतर्राष्ट्रीय कार्यभारों के निर्वाह के लिए पार्टी ने काम करना शुरू किया। इस क्रम में सीपीपी के नेतृत्व में 1971 में राष्ट्रीय जनवादी मंच के तैयारी आयोग का गठन हुआ।

इसी दौरान मोरो राष्ट्रीयता की जनता ने राष्ट्रीय उत्पीड़न के खिलाफ तथा आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए संगठित होकर जुझारू कार्रवाइयों के साथ सशस्त्र संघर्ष छेड़ दिया।

एनपीए के गठन के तुरंत बाद 1969 और 1970 में उसने फिलिप्पींस की सरकारी सशस्त्र बलों पर कई हमले किए। हालांकि पार्टी ने 1969 में रीजियन स्तर पर पार्टी कमेटियों और एनपीए कमाण्ड का निर्माण करने का फैसला ले लिया था, लेकिन उसे 1970–72 के बीच ही अमली जामा पहनाया जा सका। इस तरह उत्तर लूजान, मध्य लूजान, मनीला–लूजान, दक्षिण लूजान, पश्चिम विसयास, मिंडनावो आदि इलाकों में रीजनल कमाण्डों का गठन किया गया।

1972 से 74 तक की अवधि में एनपीए का देशव्यापी विस्तार हुआ। 1969 से 1979 के बीच के दशक को पार्टी, एनपीए, एनडीएफ तैयारी आयोग (1973 में एनडीएफ) के गठन का; देश भर में सशस्त्र क्रांति की नींव रखने का; देश के कुछ रणनीतिक इलाकों में गुरिल्ला फ्रंटों, गुरिल्ला जोनों और गुरिल्ला बेसों को विकसित करने का दशक बताया जा सकता है। 1979 तक एनपीए मुख्यतया सशस्त्र प्रचार दस्तों और गुरिल्ला दस्तों के रूप में काम करती रही। हालांकि कुछ प्लाटूनें भी रहती थीं ताकि दुश्मन पर हमले करने के लिए जरूरत पड़ने पर बलों की गोलबंदी में केन्द्रबिंदु के रूप में काम कर सके। 1979 में प्लाटूनों और कम्पनी के आकार वाली यूनिटों का गठन शुरू हुआ। मैदानी इलाकों में

स्पैरो यूनिटें बनाई गई थीं। सशस्त्र पार्टिजान यूनिटें छोटे आकार के गुरिल्ला दस्तों के तौर पर दुश्मन के इलाकों में गोपनीय तरीके से काम करती थीं। इस तरह सभी मैदानी इलाकों में गतिविधियां तेज हुईं।

1970 के जनवरी–मार्च के बीच राजधानी मनीला में जुझारू युवा और छात्र संगठनों के नेतृत्व में विरोध कार्रवाइयां फूट पड़ीं जो 'फस्ट क्वार्टर स्टार्ट' के रूप में प्रख्यात हुई थीं। एक–एक विरोध प्रदर्शन में 50 हजार से एक लाख तक जनता ने भाग लिया। वे देश के कई बड़े शहरों और कस्बों में फैल गए। और राष्ट्रीय चेतना के साथ शक्तिशाली राजनीतिक व सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में विकसित हो गए। इन प्रदर्शनों ने अमेरिकी साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल पूंजीवादी नीतियों के खिलाफ बुनियादी समस्याओं को सामने लाया। इस आंदोलन ने राष्ट्रीय जनवादी क्रांति के कार्यभार का अभूतपूर्व स्तर पर प्रचार किया। फिलिप्पीनी जनता के क्रांतिकारी संघर्ष तथा जुझारूपन में इसने एक नयापन लाया।

1968–70 के बीच मार्कोस की तानाशाही सरकार ने शुरू में ही पार्टी और एनपीए का सफाया करने की मंशा से एक आक्रामक अभियान छेड़ दिया। 1970 से 1986 तक 'ओप्लान मममायान' शुरू कर कत्लेआम, गोलीबारियां, बड़े पैमाने पर सशस्त्र हमले, जबरिया विस्थापन, बमबारी, जन आवासों को जला देना, धमकियां, लूटखसोट और गैर–कानूनी गिरफ्तारियां–हिरासत–यातनाएं आदि के जरिए तमाम जनवादी अधिकारों का क्रूरता से हनन करने की कोशिश की।

अर्द्धउपनिवेशी व अर्द्धसामंती व्यवस्था में जब संकट बढ़ने लगा था और जनता क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए आवाज उठा रही थी, ऐसी स्थिति में सितम्बर 1972 में मार्कोस ने सैन्य शासन लागू कर फासीवादी तानाशाही लागू कर दी। जनवादी अधिकारों का अभूतपूर्व तरीके से दमन शुरू किया। देशभक्त व प्रगतिशील ताकतों के अलावा सत्ता पक्ष की आलोचना करने वाले दूसरे शासक वर्ग भी तीव्र दमन का शिकार बनाए गए। डेढ़ लाख लोगों का कत्लेआम किया गया। 60 लाख से ज्यादा जनता विस्थापित कर दी गई। गिरफ्तारियां और यातनाएं आम हो गईं।

बहरहाल, क्रांतिकारी हालात परिपक्व होने के कारण सैन्य शासन लागू करने से पहले ही जनयुद्ध व्यापक हो गया था। शोषण, उत्पीड़न और फासीवादी दमन असहनीय स्तर तक बढ़ जाने से शोषित जनता ने सीपीपी के नेतृत्व में मार्कोस की तानाशाही का धिक्कार करते हुए बहादुराना प्रतिरोध खड़ा किया।

जनता का सशस्त्र प्रतिरोध तीखा व व्यापक हो गया। सैन्य शासन के चलते भूमिगत हुई तमाम जन शक्तियों की एकजुटता को स्थाई आधार देने के लिए राष्ट्रीय जनवादी मंच के तैयारी आयोग ने 24 अप्रैल 1973 को दस सूत्रीय कार्यक्रम जारी किया। उसके बाद इसी दिन को फिलिप्पींस के राष्ट्रीय जनवादी मंच (एनडीएफ) के स्थापना दिवस के रूप में घोषित किया गया।

जनसेना और संयुक्त मोर्चा मजबूत नींव पर खड़े होने के कारण ग्रामीण इलाकों में सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी संघर्ष जंगल की आग की तरह फैल गया। क्रांतिकारी ताकतों ने पहले द्वीपों में रणनीतिक इलाकों और बाद में दूसरे महत्व के इलाकों में काम पर ध्यान केन्द्रित किया। सशस्त्र संघर्ष पहाड़ी इलाकों से मैदानों, शहरों और समुद्र के तट तक फैल गया। जमीन का किराया कम करने, कर्जों पर ब्याज कम करने, खेतिहर मजदूरों की मजदूरी बढ़ाने, फसलों को वाजिब दाम देने आदि मांगों से चलाए गए सामंत–विरोधी संघर्षों के साथ आंदोलन आगे बढ़ा। मजदूरों, छात्रों, महिलाओं, बुद्धिजीवियों और शहरी गरीबों के आंदोलन तेज हो गए। खुले और भूमिगत आंदोलन तालमेल के साथ तेजी से विकसित हुए।

उपरोक्त जन उभारों में एनडीएफ की भूमिका अहम थी। इसे पार्टी का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन मिलता रहा। क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में लावा के दक्षिणपंथी सुधारवादी दिशा के खिलाफ लड़ते हुए सही दिशा अपनाकर, कानूनी व गैर–कानूनी आंदोलनों के अनुभवों से लैस होकर एनडीएफ ने क्रांतिकारी–जनवादी जन संगठनों का निर्माण करने व संगठित करने में अहम भूमिका निभाई। उसने कई साम्राज्यवाद–विरोधी व सामंत–विरोधी संघर्षों का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया। निरंकुश दलाल शासकों के खिलाफ लाखों जनता को लामबंद किया। ग्रामीण इलाकों में पल–बढ़ रही वैकल्पिक क्रांतिकारी जन राजसत्ता के अंगों का तालमेल करते हुए उन्हें मजबूत करने की कोशिश की। पार्टी, एनपीए और एनडीएफ के मिले–जुले प्रयासों के फलस्वरूप गुरिल्ला फ्रंटों, गुरिल्ला जोनों और गुरिल्ला बेसों का गठन व विकास हुआ। जनयुद्ध उन्नत चरण पर विकसित हुआ। इस अनुभव से यह बात फिर एक बार साबित हो गई कि नई जनवादी क्रांति के अंतर्गत सर्वहारा को संयुक्त मोर्चे की अगुवाई करनी चाहिए और सशस्त्र संघर्ष में मजदूर–किसान एकता अनिवार्य है। तभी शहरी निम्न पूंजीपति वर्ग और ढुलमुल मध्यम पूंजीपति वर्ग समेत बुनियादी वर्गों को गोलबंद करना संभव हो सकेगा। प्रतिक्रियावादी वर्गों के अंदर मौजूद फूटों का इस्तेमाल करते

हुए उन्हें अलग–थलग कर उनकी सत्ता को ध्वस्त करना तथा नई जनवादी राजसत्ता को स्थापित करना संभव हो सकेगा। एनडीएफ के अनुभव ने यह साबित किया कि पार्टी और संयुक्त मोर्चा का एक ही कार्यक्रम और एक ही क्रांतिकारी वर्गदिशा होनी चाहिए ताकि नई जनवादी क्रांति को सफल बनाया जा सके। अर्द्धउपनिवेशी और अर्द्धसामंती परिस्थितियों में दीर्घकालीन जनयुद्ध के बारे में, क्रांति के दो चरणों (पहले नई जनवादी क्रांति, बाद में समाजवादी क्रांति), उनके बुनियादी नियमों और उनके ठोस क्रियान्वयन के बारे में सीपीपी ने चीन और वियत्नाम की सफल क्रांतियों के अनुभव से सीख लिया।

उस समय पार्टी ने शहरों में मौजूद जन संगठनों का मार्गदर्शन सांगठनिक विभाग के तहत स्थित ब्यूरो के जरिए किया। शहरों में उन्हें दुश्मन के हमले से बचाते हुए भूमिगत रखना एक मुख्य समस्या थी। मार्कोस के निरंकुश शासन के दौरान भी इस तरह उन्हें कायम रखा गया। सैनिक शासन लागू करने के तुरंत बाद एनडीएफ के नेतृत्व में 'लिबरेशन' बुलिटिन का प्रकाशन किया गया। उसने पार्टी के 'नेशनल प्रेस ब्यूरो' के सहयोग व सहायता से 'फ्री फिलिप्पींस न्यूस सर्वीस' को भी शुरू किया ताकि क्रांतिकारी आंदोलन की समाचार संस्था की भूमिका निभाई जा सके। शहरों के जिन कैडरों और जन कार्यकर्ताओं पर दुश्मन की निगरानी बढ़ी उन्हें पार्टी ने बड़ी संख्या में गुरिल्ला जोनों में भिजवा दिया। 1975 और 1976 में मजदूरों और छात्रों के आंदोलनों ने जोर पकड़ लिया। गुरिल्ला जोनों के बाहर गैर–कानूनी किसान संगठनों का निर्माण शुरू हुआ। कानूनी प्रगतिशील जन आंदोलन के विकास में 'क्रिश्चियन्स फर नेशनल लिबरेशन' (सीएनएल) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके जरिए एनडीएफ पहले से ज्यादा संगठित व मजबूत हुआ। 1976–77 तक यह स्पष्ट हो चुका था कि क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने में अमेरिका की दलाल मार्कोस सरकार विफल हो गई। क्रांतिकारी आंदोलन का विकास और विस्तार जारी रहा।

1980 में सीपीपी ने यह लाइन सामने लाई कि जनयुद्ध और सशस्त्र संघर्ष को आगे बढ़ाने में राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे के तौर पर एनडीएफ का मजबूत ढांचा ही अहम शक्ति के रूप में होगा।

ऐसे अत्यंत अनुकूल परिस्थितियों में 1980 के पहले भाग में एनपीए के कार्यनीतिक हमले उच्च स्तर पर पहुंच गए। 1980–83 के बीच विभिन्न प्राविन्सों में गुरिल्ला फ्रंटों का गठन हुआ। सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी सुधारों का न्यूनतम कार्यक्रम लागू हो गया। राजनीतिक सत्ता के अंगों का गठन हुआ। 1985 तक एनपीए 7 हजार रायफलों से लैस होकर मजबूत हो गई।

दक्षिण में मोरो जनता ने मार्कोस के फासीवादी शासन के खिलाफ सेना का निर्माण कर सशस्त्र विद्रोह चलाया। मोरो क्रांतिकारी संगठन (एमओआरओ) एनडीएफ का भागीदार बन गया। एनपीए ने उन्हें संगठित किया। चिको नदी पर बांध परियोजना, जो पर्यावरण को नष्ट करने वाली थी, और अब्रा में सेल्लोफिल कार्पोरेशन का मजबूती के साथ प्रतिरोध करते हुए कार्डिल्लेरा की जनता ने अपने आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए जनसेना व क्रांतिकारी फ्रंट के निर्माण में हिस्सेदार बन गए। देश के दूसरे इलाकों में, खासकर मिंडानावो के अंदर लुमड क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन का विकास हुआ। 1981 में कार्डिल्लेरा लोक जनवादी मोर्चे का निर्माण हुआ जो एनडीएफ में शामिल हो गया। एनडीएफ ने 1980 में बेल्जियम के अनट्वेर्प शहर में स्थाई जन ट्रिब्युनल के सामने मार्कोस की तानाशाही के खिलाफ एमएनएलएफ के साथ मिलकर सुनियोजित तरीके से संघर्ष किया। इस तरह देश में जारी क्रांतिकारी आंदोलन के लिए विदेशों से नैतिक व पादार्थिक समर्थन जुटाने में एनडीएफ ने सफलता हासिल की।

1981 में एनडीएफ के सचिवालय का गठन हुआ। 1984 में समूचे विसयास इलाके में एनडीएफ के सचिवालय का निर्माण हुआ जिसने पाने, नेग्रोस और समर द्वीपों में एनडीएफ सचिवालयों का गठन किया।

1982 में एनडीएफ ने कटिपुनान मसौदा कार्यक्रम को तैयार कर अपने दोस्ताना संगठनों और अन्य प्रगतिशील संगठनों में वितरित किया। 1985 की शुरूआत तक यह देश–विदेशों में व्यापक रूप से प्रचारित हुआ। 1983 में बेनिग्नो अक्विनो की हत्या के बाद देश भर में अभूतपूर्व स्तर पर विरोध प्रदर्शन हुए थे। राष्ट्रीय जनवादी आंदोलन आगे बढ़ा। नए जन संगठन, संयुक्त मोर्चे, विभागीय व बहु विभागीय संगठन, कई तरह के खुले आंदोलन, लांगमार्च और बड़े प्रदर्शन पनपे थे। इस तरह खुले आंदोलनों के सशस्त्र संघर्ष के साथ एकजुट हो जाने से 1983–86 के दरमियान भारी उभार देखने को मिले थे।

सामाजिक परिस्थितियों का तेजी से बिगड़ जाना, शासक वर्गों के अंदर अंतरविरोध तीखा होना, जनयुद्ध के जरिए सरकारी सशस्त्र बलों पर हर तरफ

से प्रहार होना, सेनेटर बेनिग्नो अक्विनो की हत्या के खिलाफ भड़का जनाक्रोश, आदि से फासीवाद–विरोधी आंदोलन और ज्यादा व्यापक हुआ। मई 1985 में एक हजार से ज्यादा जन संगठनों ने एक मंच पर आते हुए बयान (नव देशभक्तिपूर्ण गठबंधन) नामक संयुक्त मोर्चे का गठन किया। इसने मुख्य रूप से मजदूर व किसानों समेत तमाम शोषित वर्गों के लोगों के दृढ़ संकल्प और ताकत के बल पर काम किया। इसकी सदस्यता 10 लाख तक थी जिसमें महिलाएं, नौजवान, छात्र, शहरी गरीब, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक, चर्च, मजदूर, शिक्षक और व्यावसायिक विशेषज्ञ शामिल थे। इसने राष्ट्रीय आजादी और जनवाद के लिए संघर्ष किया। शासक वर्गों में से कुछ गुटों ने भी इसमें हिस्सेदारी ली। आखिर में सेना में भी विद्रोह उठ खड़ा हुआ जोकि शासक वर्गों का सबसे ताकतवर औजार है। जन विरोध का आम विद्रोह का रूप धारण करना, कई प्रतिक्रियावादियों के अंदर भी बढ़ा असंतोष, मार्कोस के शासन के प्रति अपना खुला समर्थन वापस लेने पर अमेरिका का मजबूर होना, आदि ने परिस्थिति को चरम तक पहुंचाया। फलस्वरूप फरवरी 1986 में मार्कोस की तानाशाही ढह गई।

1980 के दशक की शुरूआत में बढ़ते अनुकूल हालात और क्रांतिकारी संघर्ष के तेजी से आगे बढ़ने को देखकर पार्टी नेतृत्व त्वरित विजय के भ्रम में बह गया। मुख्य रूप से सैनिक दुस्साहसवाद व शहरी विद्रोही मानसिकता से युक्त वामपंथी लाइन का प्रभाव बढ़ा। इससे उसके बाद मिंडानावो व अन्य इलाकों में पार्टी और क्रांतिकारी संगठनों में दुश्मन के दलाल घुस गए, ऐसे मनोगतवादी अति आकलन से 'घुसपैठ विरोधी उन्माद' और नौकरशाही रुझान बढ़ गए। इससे क्रांतिकारी ताकतों का आगे बढ़ना रुक गया। दुश्मन की कार्यनीति का एनपीए मुकाबला नहीं कर सकी। फलस्वरूप उसे तीव्र नुकसानों का शिकार होना पड़ा। दरअसल, उस समय प्रतिक्रियावादी सशस्त्र बलों की तुलना में जनयुद्ध रणनीतिक आत्मरक्षात्मक चरण में ही था।

उसी दौरान देहाती व शहरी इलाकों में फासीवादी तानाशाही के खिलाफ विभिन्न रूपों में जन संघर्ष तेज हुआ। जनयुद्ध की लाइन से पार्टी के भटक जाने से जो नुकसान हुआ था, उसकी इस संघर्ष ने कुछ हद तक भरपाई की।

मार्कोस के बाद कोराजान अक्विनो सत्ता में आई थी। आते ही उन्होंने एनडीएफ के साथ वार्ता करके 1987 में संघर्ष विराम का समझौता कर लिया। अस्थाई तौर पर 60 दिनों के लिए संघर्ष विराम हुआ। लेकिन, कुछ ही दिनों में सरकार ने मेंडियोला नरसंहार मचाकर उस समझौते का उल्लंघन किया। एक

बहुत बड़ा व क्रूर दमन अभियान शुरू किया।

आकर्षक जनवादी नारों के साथ सत्ता में आने वाली कोराजान अक्विनो की सरकार ने क्रांतिकारी ताकतों और जनता के खिलाफ 1987 से 'सम्पूर्ण युद्ध' और 'धीरे–धीरे निर्माण' की नीति अपनाई थी। 1987 के मध्य में 'ओप्लान रेड बस्टर' और 1988 में 'ओप्लान डेल्टा बस्टर' के जरिए पार्टी व एनपीए को भारी नुकसान पहुंचाया।

कोरोजान अक्विनो के बाद सत्ता में आए रामोस की सरकार ने 1988 से 1998 तक 'ओप्लान लम्बट बिटग–1, 2, 3, 4' के नाम से लगातार आंतरिक सुरक्षा आपरेशन्स (आइएसओ) चलाए थे। इन आपरेशन्स को अमेरिका द्वारा निर्देशित 'कम तीव्रता वाले संघर्ष' (एलआईसी) की रणनीति के अनुसार चलाया गया था। इसके तहत एक ओर मनोवैज्ञानिक युद्ध की कार्यनीति पर चलते हुए दूसरी ओर क्रूर सशस्त्र हमले चलाए गए थे। 'क्लियर–होल्ड–कन्सालिडेट' यानी सफाया करो–पकड़ में लाओ–मजबूत बनाओ' की कार्यनीति पर अमल किया गया। अलसा मसा, पुलहन, पुटियन, डेकोलोरेस जैसे गोपनीय हत्यारे दस्तों का गठन हुआ। इन्होंने बाद में सिविल वालंटरी आर्गनाइजेशन और सिटिजेन्स आर्म्ड फोर्स जियोग्राफिकल यूनिट के रूप में अपना रंग बदल लिया। देश भर में फासीवादी आतंक ने तांडव मचाया। बाद में वह अघोषित सैन्य शासन के रूप में बदल गया। मार्कोस की तानाशाही के प्रति विरोध के चलते कोराजान अक्विनो के शासन के प्रति हालांकि शुरू में जनता में भ्रम पैदा हुई थी, लेकिन जल्द ही वह जनता से अलग–थलग पड़ गई। रणनीतिक तौर पर क्रांतिकारी आंदोलन को ध्वस्त करने की कोशिश में वह विफल हो गई।

एनडीएफ ने 1986 में दक्षिण लूजान में कार्यक्रम शुरू किया था और दक्षिण टगालाग रीजियन में दो म्युनिसिपल काउंसिलों की स्थापना की। 1986 के आखिर और 1987 की शुरूआत में रीजनल काउंसिलों का गठन किया गया। उसके बाद सभी जन संगठनों के अधिवेशन हुए थे और उनकी सक्रियता बढ़ी। इस तरह 1980 के दशक के आखिर तक क्रांतिकारी ताकतों के बीच फिर से एकता लाने में एनडीएफ कामयाब हुआ था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साम्राज्यवाद–विरोधी ताकतों के साथ सम्बन्धों को और विकसित कर कुछ विदेशी सरकारों और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ सम्पर्क कायम किया।

जुलाई 1990 में एनडीएफ का राष्ट्रीय कांग्रेस आयोजित किया गया था। उसमें बुनियादी क्रांतिकारी सिद्धांतों, संयुक्त मोर्चे पर पार्टी की नीति के मुताबिक,

उसके द्वारा हासिल कामयाबियों तथा संयुक्त मोर्चे को लेकर मौजूद गलत विचारों के खिलाफ सूत्रबद्ध आलोचना के आधार पर कार्यक्रम और संविधान को पारित किया गया। राष्ट्रीय काउंसिल और सचिवालय का चुनाव किया गया।

एनडीएफ ने खासकर म्युनिसिपल स्तर से ऊपर तक राजसत्ता के अंगों की तैयारी और संगठन के रूप के तौर पर काम किया। एनडीएफ के अधिवेशनों और काउंसिलों से जनता की जनवादी सत्ता के अंगों के आविर्भाव का रास्ता सुगम हुआ। गौरतलब है कि एनडीएफ अपने आपमें जन सरकार नहीं है। इस तरह की सरकार की स्थापना के लिए वह तैयारी करने वाली ताकत के रूप में

काम करता है। उस तरह की जन सरकार की ओर से आधिकारिक रूप से उसने कुछ कार्यों का निर्वाह किया। उसने क्रांतिकारी आंदोलन और जन राजसत्ता के अंगों का प्रतिनिधित्व किया। राष्ट्रीय व जनवादी अधिकारों तथा व्यापक जन समुदायों के हितों को ऊंचा उठाते हुए उनका बचाव किया। राष्ट्रीय व सामाजिक तौर पर सभी अहम क्षेत्रों की तमाम प्रमुख समस्याओं पर तथा विदेशी इजारेदार पूंजीपतियों तथा स्थानीय प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ आंदोलनों को तेज व व्यापक बनाने में एनडीएफ ने भूमिगत जन संगठनों और खुली जनवादी ताकतों को प्रेरणा दी। अमेरिकी सैन्य अड्डों को हटाने की मांग से जनता को जागृत करने, गोलबंद करने और संगठित करने में एनडीएफ ने अहम भूमिका निभाई। इस तरह उसने देश भर की व्यापक जनता का प्रतिनिधित्व करते हुए 1990–92 में सरकार के साथ शांति वार्ता में भाग लिया। हेग घोषणा (1 सितम्बर 1992) में दोनों पक्षों ने दस्तखत कर वार्ता जारी रखने पर सहमति व्यक्त की। एनडीएफ और उसके सहयोगी संगठन नई जनवादी क्रांति की आम लाइन पर दृढ़तापूर्वक खड़े थे। जब राष्ट्रीय मुक्ति और जनवाद के लिए जारी जन संघर्ष का लक्ष्य साकार होगा तभी न्यायपूर्ण और टिकाऊ शांति संभव हो सकेगी। जब–जब सरकार ने 'सम्पूर्ण स्तर पर युद्ध' और क्रूरतापूर्ण दमनात्मक नीति को जारी रखने के लिए शांति के नारे का इस्तेमाल

किया, हर बार एनडीएफ ने आलोचना की। एनडीएफ अपने इस दृढ़ मत पर खड़ा था कि असली वार्ता किसी तटस्थ देश में और तीसरे पक्ष के रूप में किसी विदेशी सरकार या किसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था की उपस्थिति में ही हो सकती है। फिलिप्पींस के अंदर और बाहर एनडीएफ और उसके सहयोगी संगठनों द्वारा अपनाई गई नीतियों, कार्यक्रमों और प्रतिनिधित्व से क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने में काफी मदद मिली। एनडीएफ के निर्माण के बाद से उसने जो कामयाबियां हासिल कीं, वो सब क्रांतिकारी काडरों, कार्यकर्ताओं और जनता के कठोर परिश्रम, आंदोलनों और कुरबानियों से ही संभव हो सकीं।

पर, 1988 के आखिरी भाग में सीपीपी नेतृत्व की गलतियों और गलत रुझानों के कारण आंदोलन को भारी नुकसान उठाना पड़ा और पीछे कदम डालने पर मजबूर होना पड़ा। पार्टी नेतृत्व समेत आत्मगत शक्तियों को बड़े पैमाने पर खोना पड़ा। पार्टी, एनपीए, जन संगठन और जनाधार उल्लेखनीय स्तर पर कमजोर हो गए। संघर्ष के इलाके सिकुड़ गए। गलत वामपंथी लाइन के खिलाफ लड़ते हुए क्रांतिकारी ताकतें सशस्त्र संघर्ष के रास्ते में मजबूती से खड़ी हो गईं। 1992 में महान भूलसुधार अभियान अपनाने के बाद दो लाइनों के बीच गहरा संघर्ष चलाया गया। पार्टी नेतृत्व समेत पार्टी और एनपीए को मजबूत बनाया गया। जनता के साथ एकजुटता बढ़ी। जन संगठनों और एनडीएफ को व्यापक बनाया गया। जनाधार को मजबूत बनाया गया। देश की जनता को अमेरिकी साम्राज्यवाद और उसकी दलाल सरकारों के खिलाफ शक्तिशाली संघर्षों में उतारा गया। गलत लाइन के चलते जो नुकसान हुआ था, इन सब कदमों से उसे पाटने की कोशिश की गई। सैद्धांतिक व राजनीतिक गलतियों के कारण देश के सामाजिक हालात और वर्गीय अंतरविरोधों के बारे में गलत आकलन पर पहुंच थे। और आत्मगत ताकत का अति आकलन करके गलत कार्यनीति अपनाने जैसी गलतियां हुई थीं। आम राजनीतिक लाइन और दीर्घकालीन जनयुद्ध की लाइन पर दृढ़ता से खड़े होकर इन गलतियों को सुधार लिया गया। इस तरह उन्होंने आगे बढ़ने के लिए आवश्यक आधार को निर्मित कर धीरे–धीरे कामयाबियां हासिल करना शुरू

किया। इसके लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ संघर्ष चलाया। अड़ियल लोगों, गद्दारों और अवसरवादियों को पार्टी से बाहर निकालकर तमाम क्रांतिकारी ताकतों को एकजुट कर भूलसुधार को सफल बनाया गया। देश भर में जनाधार को व्यापक व मजबूत बनाते हुए क्रांतिकारी ताकतों की शक्ति, क्षमता तथा परिस्थितियों के मुताबिक गुरिल्ला युद्ध, जनयुद्ध को तेज किया गया। 1998–99 तक दूसरा महान भूलसुधार अभियान सफलतापूर्वक पूरा हुआ। इससे पार्टी, एनपीए और पूरे क्रांतिकारी आंदोलन में उल्लेखनीय वृद्धि हासिल हुई। अपनी शक्ति व क्षमता के मुताबिक सशस्त्र कृषि क्रांति को धुरी बनाकर जनयुद्ध को आगे बढ़ाया गया।

जोसेफ एस्ट्राडा के राष्ट्रपति बनने के बाद 1998 से 2001 तक क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ 'ओप्लान मकबयान' के नाम से एक और दमनात्मक अभियान चलाया गया। इसका लक्ष्य था क्रांतिकारी शक्तियों पर ऐसा प्रहार करना कि वह दोबारा खड़े होने न पाए। पहले दक्षिणी टगालाग, बैकोल पर और बाद में उत्तरी मिंडानावो पर जोर लगाकर 'क्लियर–होल्ड–कन्सालिडेट–डेवलप' की कार्यनीति अपनाई गई। हालांकि क्रांतिकारी संघर्ष को कुचलने में यह दमनात्मक हमला भी विफल ही रहा।

बाद में ग्लोरियो अर्रोयो की सरकार ने अमेरिकी साम्राज्यवादियों के निर्देश पर 2001 से 2010 तक 'ओप्लान बंटे लाया–1' और 'ओप्लान बंटे लाया–2' के नाम से दमनात्मक अभियान चलाए थे। इन अभियानों का लक्ष्य था एनपीए को ध्वस्त करना और उसे पंगु बना देना। ये हमले फिलिप्पीनो जनता पर क्रूरता और आतंक का पर्याय बने थे।

लेकिन एनपीए द्वारा देश भर में चलाए गए जवाबी हमलों और जन आंदोलन के फलस्वरूप 2005 के मध्य तक 'ओप्लान बंटे लाया–1' पूरी तरह विफल हो गया। इस विफलता को 2006 में फिलिप्पीनी सेना के जनरल स्टाफ ने खुद कबूल किया।

लेकिन सरकार अपनी नाकामी पर परदा डालते हुए एनपीए का नाश कर उसे रणनीतिक रूप से पराजित करने पर उतारू हो गई। उसने और भी तीव्रता तथा क्रूरता के साथ 'सुधारी हुई राष्ट्रीय आंतरिक सुरक्षा' वाली अपनी विफल योजना का 'आपरेशनल ओप्लान बंटे लाया–2' के रूप में पुनरुद्धार किया। इस आपरेशन के तहत क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं पर 'देशद्रोही' का ठप्पा लगाकर, हत्यारे गिरोहों से उनका अपहरण करवाकर, यातनाएं देकर कत्ल करवाया।

उलटा यह निर्लज्ज प्रचार किया कि उनकी हत्या फिलिप्पींस की कम्युनिस्ट पार्टी और एनपीए ने की थी। हालांकि हत्या का शिकार हुए कार्यकर्ताओं के साथियों, दोस्तों और रिश्तेदारों ने इन हत्याओं के लिए सेना को जिम्मेदार ठहराते हुए सबूत दिखाए थे, लेकिन सेना का दुष्प्रचार नहीं थमा। जनता और कार्यकर्ताओं पर तेज हो रहे दुश्मन के हमलों के जवाब में पार्टी ने यह आह्वान किया कि शोषक सरकार को ढहाने के लिए आंदोलन को जोर शोर से चलाया जाए, गुरिल्ला कार्रवाइयों को तेज किया जाए और राष्ट्रीय मुक्ति व जनवाद के लिए सभी रूपों में आंदोलन चलाते हुए आगे बढ़ा जाए। शत्रु बलों के द्वारा जारी मानवाधिकारों के उल्लंघन की घटनाओं को लेकर अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों, धार्मिक संगठनों, कुछ देशों की सरकारों, संयुक्त राष्ट्र संघ की मानवाधिकार कमेटी और कुछ विशेष पत्रकारों ने जांच अभियान चलाए थे। उन्होंने इन अत्याचारों के लिए सरकार को जिम्मेदार ठहराया।

मिंडोरा, पूर्वी विसयास और मध्य लूजान के इलाके में क्रूर सैन्य अधिकारी मेजर जनरल जोविटो पलपरन द्वारा चलाए गए फासीवादी हमलों में कुचल दिए गए। कई कार्यकर्ताओं और आंदोलनकारियों की हत्याओं का अभियान सा चला था। फिलिप्पीनी सेना द्वारा गठित हत्यारे दस्तों के हमलों में एक हजार से ज्यादा लोग मारे गए। 'राजसत्ता के दुश्मन' का ठप्पा लगे कार्यकर्ताओं, जन नेताओं तथा सरकार की तीखी आलोचना करने वालों पर भी झूठे केस लगाए गए। कानूनी–गैरकानूनी, खुली–भूमिगत और सशस्त्र–निहत्थी ताकतों के बीच फर्क नहीं देखा गया। शहरों और राजधानी मनीला में सैन्य बलों द्वारा गश्त आम दृश्य बन गया।

हालांकि रणनीतिक तौर पर देखा जाए तो फिलिप्पींस की सरकारी सेना और एनपीए बलों का अनुपात 10:1 (एक सरकारी सैनिक के मुकाबले में एक एनपीए सैनिक) है, लेकिन एनपीए इस स्थिति में है कि वह फिलिप्पीनी सेना के खिलाफ कार्यनीतिक जवाबी हमलों में एक सरकारी सैनिक के मुकाबले अपने

दस सैनिकों को भी लगा सकती है।

फिलिप्पीनी सेना प्रत्येक मौके पर अपने बलों को कुछ ही पाकेटों में केन्द्रित कर पा रही है, जबकि एनपीए कार्यनीतिक जवाबी आक्रमणों में पहलकदमी को अपने हाथ में ले पा रही है। रेइड, ऐम्बुश, विध्वंसक कार्रवाइयां, स्नाइपर हमले, गिरफ्तारी आपरेशन्स समेत कई किस्म की कार्रवाइयों को अंजाम दिया। व्यापक जन समुदायों ने चेतनाबद्ध होकर निर्णायक तरीके से विरोध प्रदर्शनों और प्रतिरोधी संघर्षों में भाग लिया।

एनपीए के द्वारा अभूतपूर्व स्तर पर किए गए हमलों के फलस्वरूप फिलिप्पीनी सेना को कई बड़े झटके सहने पड़े। सेना और पुलिस का मनोबल गिर गया। नियमित पुलिस बलों में अपने अधिकारियों के प्रति गुस्सा बढ़ा। अपमानजनक व्यवहार, खाने की चीजों व भत्तों में धोखाधड़ी, खतरनाक हालात में अंधाधुध गश्त पर भेजे जाने और कई खामियों के साथ आपरेशन्स चलाए जाने को लेकर वे खफा थे।

लगातार नाकामयाबियों का शिकार होने से उत्पन्न डर व निराशा के वातावरण में सैन्य अधिकारियों और नियमित पुलिस बलों ने जनता पर हमले करते हुए मानवाधिकारों का मनमाने ढंग से हनन करना शुरू किया। साथ ही, युद्ध में विजय हासिल करने के दावे करने के लिए या फिर मुठभेड़ों में हथियार खोने का दावा करके हथियार व कारतूस कम भाव में बेचकर कमाई करने के लिए उन्होंने 'फर्जी मुठभेड़ों की कहानियां' गढ़ना भी सीख लिया।

एनपीए के कई लड़ाकुओं को मार गिराने, एनपीए की यूनिटों को फतह करने और उनके कई कैम्पों पर कब्जा करने और कई गुरिल्ला फ्रंटों को ध्वस्त करने की मनगढ़ंत कहानियां फैलाकर उन्हें अपनी कामयाबियों के रूप में प्रचार करने में फिलिप्पीनी सरकार और तमाम सैनिक कमानें जरा भी शर्म महसूस नहीं कर रही हैं। वास्तव में खुद उन्हीं को ज्यादा नुकसान उठाने पड़े थे। आम लोगों

को आत्मसमर्पित एनपीए गुरिल्लों के रूप में चित्रित किया जा रहा है। गांवों पर कब्जा करके एनपीए के कैम्पों को कब्जाने का दावा कर रहे हैं। दरअसल उन्होंने एक भी गुरिल्ला फ्रंट को ध्वस्त नहीं किया। उनमें से एक भी नष्ट नहीं हुआ। बल्कि कई अन्य गुरिल्ला फ्रंटों के निर्माण की नींव डाली जा रही है। देश के 7,100 द्वीपों में मौजूद 170 जिलों को जोड़ते हुए इनका निर्माण जारी है।

अर्रोयो सरकार और सेना ने बार–बार डींगें हांकीं कि 2010 के मध्य तक एनपीए को ध्वस्त या छिन्न–भिन्न किया जाएगा। शहरी इलाकों, स्कूलों, गिरिजाघरों और बस्तियों में नाके लगवाकर मजदूरों, शहरी गरीबों और महिलाओं को डराया व धमकाया गया। शहरी इलाकों में राष्ट्रीय जनवादी आंदोलन को कुचलने के लिए बड़े पैमाने पर निरर्थक आपरेशन्स चलाए गए। इससे सरकार का दूसरा हमला 'ओप्लान बंटे लाया–2' और ज्यादा बदनाम हो गया। तय समय से पहले ही, यानी जून 2010 तक ही फिलिप्पीनी सेना के प्रमुख जनरल विक्टर इब्राडो को खुद स्वीकारना पड़ा कि सशस्त्र क्रांति और जन आंदोलनों को कुचलने में अर्रोयो सरकार विफल हो गई।

शोषक शासक वर्गों के प्रति–क्रांतिकारी आक्रमणों को हराने के लिए रणनीतिक आत्मरक्षात्मक स्थिति के अंतर्गत ही कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण चलाए गए। दुश्मन के अभियानों को पराजित करने के लिए व्यापक जनता को गोलबंद किया गया। इस तरह फिलिप्पींस में एनपीए बहुत बड़ी क्रांतिकारी सेना के रूप में उभरकर सामने आई। वह कई लड़ाइयों में सुदृढ़ बन गई। फिलहाल वह कार्यनीतिक प्रत्याक्रमणों के जरिए देश भर में दुश्मन पर कड़ा प्रहार करने की स्थिति में है। दुश्मन के खिलाफ लड़ने में, क्रांतिकारी प्रचार में तथा जनता के राष्ट्रीय व जनवादी अधिकारों के लिए जारी अभियानों में जनता को गोलबंद व संगठित करने में उसने ख्याति अर्जित की। सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन में किसानों और अन्य लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने में उसने सफलता हासिल की। एनपीए की अतिरिक्त ताकत के रूप में तथा रिक्त स्थानों की भर्ती के स्रोत के रूप में दसियों हजार जन मिलिशिया बल स्थानीय पुलिस बलों के रूप में काम कर रहे हैं। शारीरिक रूप से सुदृढ़ सैकड़ों स्त्री–पुरुष विभिन्न जन

संगठनों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। सब–रीजियनल और प्रोविन्शियल स्तर पर या तीन से पांच गुरिल्ला फ्रंटों वाले इलाकों में भी (सब–रीजनल, फ्रंट) स्थानीय बलों से मिलिशिया, बारियो आत्मरक्षा कोर तक और शहरी केन्द्रों में विशेष कार्रवाइयों के लिए पार्टिजान या स्पैरो यूनिटों से जुड़ी सम्पूर्ण स्तर की कमान व्यवस्था एनपीए में विकसित हो रही है।

सफल कार्यनीतिक प्रत्याक्रमणों के दौरान दुश्मन के बलों से छीने गए हथियारों से हथियारों की कुल संख्या में 33 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई। एनपीए की कार्रवाइयों का विस्तार देश के 70 प्राविन्सों में मौजूद हजारों बारियो, सैकड़ों कस्बों व शहरों में हुआ। गुरिल्ला फ्रंटों की संख्या 100 से ज्यादा हो गई। जहां बड़े गुरिल्ला फ्रंटों में 60–100 बारियो (प्राथमिक आवासीय इलाका या गांव) आते हैं जबकि छोटे व मध्यम फ्रंट 40–59 बारियो को कव्हर करते हैं। नए इलाकों में गुरिल्ला फ्रंट तेजी से विकसित हो रहे हैं। लाखों जनता का जनाधार उसे हासिल है। देश के ठीक आधे शहरों और कस्बों में, यानी 1600 कस्बों और 800 शहरों में लाखों जनता संगठित हो गई।

गुरिल्ला फ्रंटों में एनपीए जन राजसत्ता के अंगों (पीपुल्स कमेटी), जन संगठनों और स्थानीय पार्टी शाखाओं का निर्माण करते हुए क्रांतिकारी जनाधार का विस्तार कर रही है। मजदूरों, किसानों, महिलाओं, युवाओं, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं और बालक संगठन के सक्रिय सहयोग से ही जन राजसत्ता के अंग विकसित हो रहे हैं। इन अंगों के तहत जन संगठनों की कार्यकारी कमेटियां, शिक्षा, भूमि सुधार, वित्त, आजीविका, उत्पादन, स्वास्थ्य, रक्षा, सांस्कृतिक मामले, न्याय विभाग और अन्य जरूरी विभाग कार्यरत हैं। स्थानीय पार्टी शाखाएं राजसत्ता के स्थानीय अंगों का नेतृत्व कर रही हैं। एनपीए जनता की जनवादी सरकार के अंगों/संस्थाओं के हाथ में मजबूत हथियार के रूप में विकसित हुई।

प्रत्येक बारियो में जन मिलिशिया एक दस्ते से एक प्लाटून तक के आकार में स्थानीय पुलिस के रूप में काम करती है। इसके अलावा सरकारी सशस्त्र बलों के खिलाफ मिलिशिया की टीमें निगरानी और कुछ ठोस हमले कर रही हैं। सरकारी बलों की गतिविधियों पर नजर रखने व रिपोर्ट करने के लिए राजसत्ता के अंग और जन संगठन सक्षम नेटवर्क से लैस हैं। जन मिलिशिया और रक्षा कमेटियां आत्मरक्षा यूनिटों के साथ एकताबद्ध होते हुए गुरिल्ला युद्ध को व्यापक रूप से विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं।

पार्टी, जनसेना और क्रांतिकारी जन आंदोलन का बड़े पैमाने पर निर्माण

करना इस चरण का प्रधान स्वभाव के रूप में होगा। क्रांतिकारी जनाधार लगातार व्यापक और मजबूत बन रहा है। हर गुरिल्ला फ्रंट में एक कम्पनी, हर गुरिल्ला जोन में एक प्लाटून है तथा अन्य प्लाटूनें एक व्यापक इलाके को कव्हर करती हैं और गुरिल्ला फ्रंट के दायरे में आने वाले जिलों में प्रत्येक म्युनिसिपालिटी में एक प्लाटून के हिसाब से जनसेना का ढांचा निर्मित हो रहा है।

सांगठनिक रूप से मजबूत बारियो, म्युनिसिपालिटी और जिला स्तर पर राजनीतिक सत्ता के संगठनों की स्थापना की जा रही है। देहाती व शहरी इलाकों में जनता को जागृत बनाकर एकजुट व संगठित करने के लिए अत्यधिक शहरों में हर प्रकार का प्रयास जारी है। स्थानीय व उन्नत स्तर पर संयुक्त मोर्चे का निर्माण हो रहा है। ग्रामीण इलाकों से भर्ती ज्यादा है। शहरी इलाकों से भी भर्ती बढ़ी है। नियमित भर्ती, प्रशिक्षण और तीव्रता के साथ चले कार्यनीतिक प्रत्याक्रमणों के फलस्वरूप एनपीए के लाल योद्धाओं की संख्या हजारों में बढ़ी है। उसका मनोबल ऊंचा है। चूंकि कुछ इलाकों में दुश्मन अपने हमलों को केन्द्रित कर रहा है, इसलिए कुछ अस्थाई दिक्कतें आ रही हैं। हालांकि जनता शत्रु बलों द्वारा चलाई जा रही बर्बरतापूर्ण कार्रवाइयों का प्रतिरोध कर रही है। इसके लिए किसान और सक्रिय कार्यकर्ता अनिवार्य रूप से जनसेना में शामिल हो रहे हैं।

एनपीए असली भूमि सुधारों पर हर संभव जोर दे रही है जोकि नई जनवादी क्रांति की धुरी हैं। गरीब किसानों व खेतिहर मजदूरों को, जोकि क्रांति की प्रधान शक्ति हैं, जागृत, गोलबंद व संगठित कर रही है। एनपीए की यूनिटें स्थानीय पार्टी शाखाओं और किसान संगठनों के साथ तालमेल करते हुए जहां भी संभव है, न्यूनतम भूमि सुधार कार्यक्रम को लागू कर रही हैं, जिसमें जमीन के भाड़े में कटौती, सूदखोरी का अंत, खेतिहर मजदूरों के वेतनों में बढ़ोत्तरी, फसलों को समर्थन मूल्य, कृषि और कृषि आधारित उत्पादों को प्रोत्साहन आदि शामिल हैं। जहां कहीं भी संभव है वहां पर अधिकतम भूमि सुधार कार्यक्रम लागू किया जा रहा है जिसमें जमीनों पर कब्जा, जमींदारों से किसानों को जमीनें वापस दिलवाना, मुफ्त जमीन बंटवारा, भूमि सुधारों के हितग्राहियों को तकनीकी, आर्थिक आदि सहायता शामिल हैं। जनता की जनवादी सरकार के कानूनों के मुताबिक भूमि सुधारों की मांग उठा रहे किसानों के समर्थन में जनसेना खड़ी है। किसानों के साथ एकताबद्ध होते हुए कृषि क्रांति को साकार बनाने में जनसेना निर्णायक ताकत बन गई है।

'ओप्लान बयनिहान'

अमेरिकी साम्राज्यवादियों के प्रत्यक्ष व परोक्ष निर्देशों के मुताबिक फिलिप्पींस के पहले राष्ट्रपति रोक्सास से लेकर ग्लोरियो अर्रोयो तक सभी दलाल सरकारों ने सीपीपी के नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी आंदोलन को अपनी शोषणकारी व्यवस्था के लिए खतरा मानते हुए उसका जड़ से सफाया करने के लक्ष्य से निरंतर 'आंतरिक सुरक्षा आपरेशन्स' (दमनात्मक आपरेशन्स) चलाए। सीपीपी के नेतृत्व वाली एनपीए ने इन सभी को पराजित करते हुए जनयुद्ध को उच्च स्तर में पहुंचा दिया। साम्राज्यवादी शोषण, उत्पीड़न व नियंत्रण का अंत करने तथा अर्द्धउपनिवेशी व अर्द्धसामंती व्यवस्था को दफनाने के लिए सर्वहारा (सीपीपी, एनपीए और एनडीएफ) के नेतृत्व में फिलिप्पीनो जनता का क्रांति के पथ पर आगे बढ़ना अमेरिका का दलाल बेनिग्नो अक्विनो, जिसने अर्रोयो के स्थान पर सत्ता संभाली, की सरकार को जरा भी रास नहीं आया। अमेरिकी साम्राज्यवाद और उसके दलाल शासक वर्ग भयभीत हो रहे हैं कि अगर फिलिप्पींस की क्रांति और ज्यादा सुदृढ़ हो जाती है तो उनके शोषणकारी हित खतरे में पड़ सकते हैं। वे षड़यंत्रकारी तरीके से क्रांतिकारी आंदोलन पर कीचड़ उछालते हुए दुष्प्रचार कर रहे हैं कि पिछड़ेपन, गरीबी और अन्य सामाजिक समस्याओं के लिए कम्युनिस्टों की हिंसा ही जिम्मेदार है। इस तरह वे जनता को धोखा में रखने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने फिलिप्पीनो क्रांति और जनता का क्रूर दमन करने के लक्ष्य से अमेरिका के काउंटर इंसर्जेन्सी गाइड का अनुसरण करते हुए 'ओप्लान बयनिहान' छेड़ दिया जोकि एक और व्यापक व चौतरफा हमला होने के साथ–साथ सम्पूर्ण प्रति–क्रांतिकारी युद्ध है।

'ओप्लान बयनिहान' के बारे में यह ढिंढ़ोरा पीटा गया कि वह 'जनता को केन्द्र बिंदु बनाकर तैयार की गई रणनीति' है और इसमें मानव सुरक्षा आपरेशन्स के ढांचे के अंतर्गत होने वाले काउंटर इंसर्जेन्सी आपरेशन्स होंगे। यह (ओप्लान बयनिहान) कथित तौर पर शांति की स्थापना में, कम्बैट (लड़ाकू) आपरेशन्स को कम करने में, बेनिग्नो अक्विनो सरकार द्वारा अपनाई गई प्रतिक्रांतिकारी नीति – सुशासन, बुनियादी सेवाओं की उपलब्धता, आर्थिक पुनरनिर्माण, स्थिर विकास और सुरक्षा क्षेत्र में सुधार – के अनुरूप अपनी प्रतिबद्धता को साबित करते हुए काम करेगा। इसमें गैर–लड़ाकू आपरेशन्स की भूमिका को बढ़ाया जाएगा और ये नागरिक–सैनिक आपरेशन्स व विकास की गतिविधियों के साथ जुड़कर रहेंगे, ऐसा प्रचारित किया जा रहा है।

दरअसल 'ओप्लान बयनिहान' या 'ओप्लान बंटे लाया–1 और 2', या फिर फिलिप्पीनी सेना द्वारा चलाए गए पूर्ववर्ती आक्रामक अभियानों में कोई बुनियादी या गुणात्मक फर्क नहीं है। फर्क इतना ही है कि पुराने ओप्लान को नया चोला पहनाया गया। इसे शांति, विकास और मानवाधिकारों के लिए बड़े स्तर पर बनाई गई योजना के रूप में चित्रित करते हुए गांव–गांव प्रचारित किया जा रहा है। वह 'शांति को जीत लेने' का नारा उछालते हुए क्रूर सैनिक दमन अभियानों को विशुद्ध 'शांति और विकास' के आपरेशन्स के रूप में दिखाते हुए एक साथ चलाए जाने वाले चौतरफा (कम्बैट, इंटेलिजेन्स और नागरिक–सैनिक) आपरेशन्स को छुपाया जा रहा है।

हालांकि इस घोषणा के साथ कि राजसत्ता की सुरक्षा को कम्युनिस्टों की ओर से पैदा हो रहे खतरे को समाप्त करने के लिए 'ओप्लान बयनिहान' चौतरफा हमलों पर जोर लगाएगा, उसकी असलियत खुद ब खुद सामने आ गई है। इस अभियान में कम्बैट और गैर–कम्बैट (इंटेलिजेन्स व नागरिक–सैनिक) आपरेशन्स को तालमेल के साथ चलाया जा रहा है। जनता को गुमराह करने के लिए, प्रति–क्रांतिकारी युद्ध में नागरिक संगठनों व एजेन्सियों का विस्तार करने के लिए तथा फिलिप्पींस की सेना के प्रति विरोध की भावना को हटाने के लिए इन दोनों का प्रयोग कर रहे हैं। गैर–कम्बैट सैनिक आपरेशन्स का लक्ष्य इंटेलिजेन्स नेटवर्क को मजबूत बनाना और कम्बैट आपरेशन्स के लिए आवश्यक समाचार मुहैया कराना है।

'ओप्लान बयनिहान' के बारे में बताया जा रहा है कि वह शांति का पक्षधर है और न्यायसम्मत भी है। लेकिन इसके पीछे दूर–दूर तक शांति की कोई योजना नहीं दिखती। राष्ट्रीय जनवादी मंच (एनडीएफ) के साथ शांति वार्ता के लिए बेनिग्नो अक्विनो सरकार कोई खास महत्व नहीं दे रही है। प्रचार में और मनोवैज्ञानिक युद्ध में हावी होने की कोशिश करने और एनडीएफ से समर्पण करने की मांग करने के अलावा बेनिग्नो अक्विनो सरकार से ऐसा कोई संकेत नहीं मिला है जिससे यह लगे कि वह कुछ दूसरा करना चाहती है। शांति वार्ता में निर्णायक भूमिका निभाने वाले सभी अधिकारी कम्युनिस्टों पर जहर उगलने के लिए जाने जाते हैं जिनके अंदर क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति जरा भी सम्मान की भावना नहीं है।

दरअसल बेनिग्नो अक्विनो सरकार 'ओप्लान बयनिहान' के जरिए ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के श्वेत व लाल इलाकों में लगातार उन्मूलनकारी आपरेशन्स पर

जोर दे रही है।

बेनिग्नो अक्विनो सरकार अपने सैनिक, पुलिस व नागरिक महकमे को लगाकर पार्टी व जनसेना को ध्वस्त करने, उसके जनाधार को खत्म करने तथा उसकी लड़ाकू क्षमता को खत्म करने के लिए गुरिल्ला फ्रंटों, गुरिल्ला जोनों और गुरिल्ला बेसों में बड़े पैमाने पर तलाशी और तबाही आपरेशन्स चला रही है। 'शांति और विकास टीमों के आपरेशन्स' के तहत श्वेत आतंक (अपहरण, यातनाएं, हत्याएं, मुखबिर बनने का दबाव, निगरानी, प्रति–क्रांतिकारी संगठनों में भर्ती करवाना आदि) के जरिए, मनोवैज्ञानिक आपरेशन्स और फूट डालने व धोखा देने की कार्यनीति के जरिए जनाधार को ध्वस्त करने पर जोर दे रही है। सरकारी सैनिक व पुलिस बल गुरिल्ला यूनिटों, पार्टी काडरों, सदस्यों, जन मिलिशिया, जन संगठन नेताओं और कार्यकर्ताओं का अपहरण करने, मार डालने, जेल में बंद करने या गद्दार बनने का दबाव डालने के लिए निगरानी आपरेशन्स को अंजाम दे रहे हैं। पूर्णकालीन गुरिल्ला यूनिटों को ध्वस्त करने के लिए निरंतर पीछा करने और दमन करने पर जोर देते हुए कम्बैट आपरेशन्स चला रहे हैं।

धीरे–धीरे शक्ति को नष्ट करने के लिए एक–एक गुरिल्ला फ्रंट पर ब्रिगेड स्तर की आपरेशनल कमान के साथ दुश्मन एक या दो बटालियनों को तैनात कर रहा है। क्लियर–होल्ड–कन्सालिडेट एण्ड डेवलप' यानी 'सफाया करना, पकड़ लेना, संगठित करना और विकास करना' की नीति पर चल रहा है। मध्य लूजान क्षेत्र में 'ओप्लान बंटे लाया' के अनुभव पर आधारित काउगर 69 आइबी लाल क्षेत्रों का सफाया आपरेशन्स इसका एक नमूना है। तीन तरह के इलाकों पर आधारित होकर युद्ध के मैदान को ढालने पर यह केन्द्रित करता है – फिलिप्पींस की सेना के नेतृत्व में गुरिल्ला बेस के इलाकों में तीव्रता के साथ कम्बैट आपरेशन्स चलाए जा रहे हैं। इसे की–होल अप्रोच के नाम से बुलाया जा रहा है। गुरिल्ला जोनों में गुरिल्ला यूनिटों का पीछा करते हुए उन्हें ऐसे इलाकों में धकेलकर जहां मुखबिर नेटवर्क मौजूद है, उनके निवास स्थलों को चिन्हित कर उन पर सुनियोजित तरीके से हमले किए जा रहे हैं। इन्हें तीव्रता के साथ चलने वाले इंटेलिजेन्स आपरेशन्स के क्षेत्र बताया जा रहा है। जहां फिलिप्पीनी सेना के इंटेलिजेन्स आपरेशन्स कमजोर हैं, वहां पर कम्बैट व इंटेलिजेन्स आपरेशन्स चलाए जा रहे हैं ताकि एनपीए के विस्तार को रोका जा सके।

फिलिप्पींस की सरकारी सेना का यह कहना कि वह शांति के लिए काम

करेगा, महज दिखावा है। वह क्रांतिकारी व प्रगतिशील संगठनों को ध्वस्त करने और उनके प्रभाव वाले इलाकों व विभागों को कुचलने के लिए एक ओर श्वेत आतंक व फासीवादी दमन का प्रयोग करते हुए ही दूसरी ओर मानवाधिकारों की रक्षा करने का ढोंग कर रही है। क्रांतिकारी आंदोलन व प्रगतिशील आंदोलनों और उनके साथ स्वतंत्र रूप से संगठित प्रतिरोध करने वाले आम लोगों पर गुनहगार का ठप्पा लगा रही है ताकि उन पर राजसत्ता द्वारा चलाई जा रही हिंसा को जायज ठहराया जा सके। भूमिगत आंदोलन ही नहीं, बल्कि कानूनी प्रगतिशील संगठनों के नेताओं और कार्यकर्ताओं को भी कत्ल करने की उसकी नीति में कोई बदलाव नहीं है। अपने फासीवादी जुर्मों को कानूनी कार्रवाई के रूप में दिखाने के लिए फिलिप्पींस की सेना कानूनों में मौजूद खामियों का खुलेआम इस्तेमाल कर रही है। वो क्रांतिकारी व जनवादी आंदोलनों की ताकतों के खिलाफ फर्जी सबूत गढ़ रहे हैं या सबूतों को उलटा–पुलटा कर रहे हैं। एक के बाद एक लगातार आपराधिक मामले दायर कर रहे हैं। भ्रष्ट अदालतों व वकीलों के द्वारा कई अन्य तरीके अपनाए जा रहे हैं। यातनाओं, धमकियों और दबाव का प्रयोग कर रहे हैं।

ओप्लान बयनिहान की विशेषता यह है कि वह नागरिक–सैनिक आपरेशन्स की भूमिका पर विशेष रूप से जोर दे रहा है। इसमें नागरिक एजेन्सियों, नागरिक संगठनों, एनजीओ, सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों, चर्च के लोगों, मास मीडिया (इलेक्ट्रानिक व प्रिंट) और समाज के कई दूसरे विभागों को बड़े पैमाने पर भागीदार बनाया जा रहा है। क्रांति–विरोधी प्रचार व मनोवैज्ञानिक युद्ध के आपरेशन्स तेज किए जा रहे हैं। इस तरह एनपीए और क्रांतिकारी संगठनों को हर तरह का दबाव व डर का शिकार बनाने की कोशिश की जा रही है। फिलिप्पीनी सेना कानूनी तौर पर हमला करने की बात कहते हुए अपने ऊपर लगे दागों को मिटाने की कोशिश कर रही है। सीएमओ आपरेशन्स व इंटेलिजेन्स को अधिक महत्व देते हुए सही सूचना के साथ सैन्य हमले करने की कोशिश कर रही है। इसके तहत वह प्रतिक्रियावादी संस्थाओं (नागरिक संगठन, स्वैच्छिक संगठन, बारियो रक्षा व्यवस्था, सेक्टर सुरक्षा व्यवस्था) की स्थापना कर रही है; व्यापक इंटेलिजेन्स नेटवर्क (बारियो इंटेलिजेन्स नेटवर्क, तकनीकी इंटेलिजेन्स नेटवर्क, स्कूल इंटेलिजेन्स नेटवर्क, फैक्टरी इंटेलिजेन्स नेटवर्क आदि) का गठन कर रही है; कम्युनिस्ट विरोधी सभाओं, रैलियों और प्रचार कर रही है; गैर–कानूनी हमले करते हुए जीविकोपार्जन की योजनाओं को शुरू कर रही है। कम्युनिस्ट विरोधी प्रचार के लिए रेडियो, टीवी कार्यक्रम, आडियो–वीडियो प्रदर्शन और

फिल्म निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर काम कर रही है।

शहरों में क्रांतिकारी व प्रगतिशील संगठनों के प्रभाव वाले इलाकों में सीएमओ आपरेशन्स चलाए जा रहे हैं ताकि क्रांतिकारी ताकतों का सफाया किया जा सके। शहरों में सीएमओ आपरेशन्स का लक्ष्य यह है कि क्रांतिकारी व प्रगतिशील पार्टियों व संगठनों का दमन किया जाए। क्रांतिकारी प्रचार व संघर्षों को जनता की भागीदारी से होने वाली कार्रवाइयों को काबू किया जाए। प्रति–क्रांतिकारी संगठनों को संगठित किया जा रहा है। इसके तहत सेक्टार डिफेन्स व्यवस्था, कम्युनिस्ट विरोधी संगठनों, पार्टियों व इंटेलिजेन्स नेटवर्क का गठन किया जा रहा है। क्रांतिकारी कैडरों, कानूनी जनवादी आंदोलन के नेताओं व कार्यकर्ताओं को निशाना बनाया जा रहा है।

अक्विनो सरकार द्वारा देश का सैन्यीकरण

इसके बावजूद भी कि देशव्यापी जन उभार के चलते 1986 में फिलिप्पींस का तानाशाह मार्कोस धराशायी हुआ था, अमेरिकी साम्राज्यवादियों के निर्देश पर देश का सैन्यीकरण करने की प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं आया है। देश में फैल रहे क्रांतिकारी आंदोलन, जन आंदोलनों व राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों को कुचलकर सड़ी–गली अर्द्धउपनिवेशी व अर्द्धसामंती व्यवस्था की रक्षा करने के लक्ष्य से ही यह सैन्यीकरण जारी है। इसीलिए अमेरिका–मार्कोस तानाशाही के समय के सैनिक अधिकार आज भी देश में उसी प्रकार लागू हैं। यानी देश में अघोषित सैन्य शासन अभी भी जारी है।

मार्कोस ने जब सैन्य शासन लागू किया था, तब फिलिप्पींस में एक लाख सेना थी जो आज दुगुनी हुई है। फिलिप्पींस के पुलिस बलों की संख्या 1,15,000 से 1,40,000 तक बढ़ी। अर्द्धसैनिक बलों व सेना के नियंत्रण में मौजूद अन्य सशस्त्र बलों को मिलाया जाए तो यह संख्या कई गुना बढ़ जाती है। अमेरिकी सैन्य सलाहकारों के सुझावों पर सेना का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। सेना के अहम अधिकारी वेस्ट पाइंट मिलिटरी अकादमी, अन्नापुलिस नावल अकादमी, फोर्ट बेनिंग जैसी अमेरिकी सैन्य संस्थाओं में जाकर प्रशिक्षण ले रहे हैं जो सीआइए के एजेंट बनकर वापस आ रहे हैं। अमेरीकी सैन्य रणनीति के मुताबिक ही फिलिप्पीनी सरकार क्रांति–विरोधी युद्धों को चला रही है। आज का 'ओप्लान बयनिहान' इसी का हिस्सा है।

गरीब किसान और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक फिलिप्पींस की सेना के हमलों का

मुख्य निशाना बने हैं। व्यापक हो रहे जन प्रतिरोध का दमन करना, विकसित हो रही जनवादी सत्ता को ध्वस्त करना, विदेशी व्यापार के हितों की रक्षा करना ही सैन्यीकरण का लक्ष्य है। अर्रोयो सरकार के दिनों से ही विभिन्न सरकारी व निजी परियोजनाओं के लिए शहरों में गरीबों की बस्तियों का सैन्यीकरण जारी है। विदेशी माइनिंग के इलाकों, व्यापारिक बागानों, बड़ी वाणिज्यिक फसलों वाले क्षेत्रों का खासतौर पर सैन्यीकरण हो रहा है। साथ ही, विदेशी कम्पनियों द्वारा निर्माणाधीन भारी बांधों और माइनिंग आदि अन्य विध्वंसक 'विकास' परियोजनाओं वाले इलाकों में तीव्र सैन्यीकरण जारी है।

दमन बेहद क्रूर व बीभत्सपूर्ण तरीके से जारी है। हत्याएं, लोगों को लापता करना, यातनाएं, गैर–कानूनी खोजबीन की कार्रवाइयां, धरपकड़ और मानवाधिकारों का हनन बेरोकटोक जारी हैं। बम हमले, गोलीबारियां और कत्लेआम व्यापक स्तर पर हो रहे हैं। इन आपरेशन्स में जनता की आजीविका, घरों व सम्पत्तियों को ध्वस्त किया जा रहा है। दसियों हजार लोग जान बचाने के लिए अपने आवासों को छोड़कर पलायन कर रहे हैं। ग्रामीणों को बलपूर्वक अर्द्धसैनिक ग्रुपों में शामिल किया जा रहा है।

2011 से ओप्लान बयनिहान के तहत क्रूर सैन्य आपरेशनों को 'शांति–विकास' की आड़ में चलाया जा रहा है। सैन्य टीमों से 'शांति व विकास के लिए समुदायों को संगठित करने' के नाम से 'स्पेशल आपरेशन्स' चलाते हुए गांवों को सेना के नियंत्रण में लाया जा रहा है। स्कूलों, सामुदायिक भवनों और अन्य सार्वजनिक भवनों में कैम्प बिठाकर आपरेशन्स संचालित किए जा रहे हैं। सेना किसानों के घरों में बलपूर्वक अड्डा डाल रही है।

सेना नौजवानों और महिलाओं को पैसों के लालच में फंसाकर उन्हें करीब लाने की कोशिश कर रही है। नशीली चीजों, शराबखोरी व अन्य अनैतिक तरीकों को बढ़ावा देते हुए फायदा उठाने की कोशिश कर रही है। इनमें से असामाजिक तत्वों को चुनकर उन्हें बारियो इंटेलिजेन्स नेटवर्क के अंदर भर्ती कर रही है।

ग्रामीणों की गतिविधियों पर भी सेना की निगरानी बढ़ रही है। जन गणना तथा सरकारी कार्यक्रमों का विरोध करने वाले व्यक्तियों व संगठनों को चिन्हित करने के नाम पर सैनिक घर–घर जा रहे हैं। सैन्य शासन की तर्ज पर कर्फ्यू और अन्य दमनकारी क्रियाकलापों पर उतारू हो रहे हैं। जो उनका विरोध करते हैं उन पर एनपीए का सदस्य होने का झूठा आरोप लगाया जा रहा है।

जनता की एकता को तोड़ने और उनके प्रतिरोध को गुमराह करने के लिए सरकारी सैनिक गलत सूचनाएं फैला रहे हैं। धोखेबाजीपूर्ण कार्यक्रमों का प्रचार कर रहे हैं। फर्जी कृषि सुधारों समेत पैसों की अदला–बदली जैसे क्रांति–विरोधी कार्यक्रमों को सेना खुद ही लागू कर रही है।

जनता को गुमराह करने के लक्ष्य से जारी ढोंगी सुधार

विभिन्न योजनाओं के जरिए जनता का विकास होने का दावा, जैसा कि अक्विनो सरकार कर रही है, कोरी बकवास है। ये सब प्रति–क्रांतिकारी युद्ध 'ओप्लान बयनिहान' के तहत जारी योजनाएं भर हैं। इनके लिए आवंटित 1.9 अरब पेसो पूर्वी विसयास के समर प्राविन्स समेत क्रांतिकारी आंदोलन के मजबूत इलाकों में मनोवैज्ञानिक युद्ध के तहत ही खर्च किए गए। सेना, पुलिस बल और सभी स्थानीय सरकारी यूनिटों ने तालमेल के साथ इन योजनाओं पर अमल किया ताकि एनपीए का मुकाबला किया जा सके। 2010 में पूर्वी समर के बलंगिगा और मसलाग कस्बों में तथा उत्तरी समर के लावोयांग, मनड्रागन व सान रोक में इनका प्रयोग किया गया। इन्हें सरकारी अधिकारियों ने नहीं, बल्कि सैन्य अधिकारियों ने ही सीएमओ बटालियनों के जरिए साफ तौर पर 'ओप्लान बयनिहान' के अंतर्गत ही लागू किया। इसके अलावा क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ अन्य प्रचार कार्यक्रमों तथा इंटेलिजेन्स नेटवर्क के गठन का तालमेल किया गया। इसमें सम्बन्धित इलाकों की पूरी खुफिया जानकारी इकट्ठी की जा रही है। उदाहरण के लिए पीने के पानी की परियोजना शुरू करने के नाम पर सम्बन्धित बारियो में स्थित पानी के सभी स्रोतों की जानकारी जुटा रहे हैं और नक्शे तैयार कर रहे हैं। सितम्बर में लेटे बारियो में ग्रामीणों की तस्वीरें खींचने की कोशिश करने पर उन्होंने इसका कड़ा विरोध किया। रेडियो के जरिए सेना की साजिशों का पर्दाफाश किया गया। उत्तरी समर, समर और पूर्वी समर की सीमा पर सड़क निर्माण हो रहा है ताकि 2013 तक बड़ी माइनिंग कम्पनियां आसानी से घुस सकें तथा इसे रोकने वाले क्रांतिकारी बलों पर तेजी से हमला करने के लिए सेना को सुविधा मिल सके।

गरीबी उन्मूलन के नाम पर अपनाए गए कार्यक्रम को बेनिग्नो अक्विनो सरकार 'सशर्त धन बदली योजना' के रूप में बड़े पैमाने पर प्रचारित कर रही है। इसके द्वारा सरकारी अधिकारी धनी किसानों समेत प्रायोजित परिवारों को धन मुहैया कराया जाता है। इसका लक्ष्य है बहुत कम समय में चंद जन समुदायों की विधेयता को खरीदना। यह योजना मुख्य रूप से गुरिल्ला फ्रंटों में

अमल के लिए लाई गई है। इसका असली लक्ष्य काउंटर इंसर्जेन्सी की योजना 'ओप्लान बयनिहान' में सहयोग देना है।

इको टूरिज़्म और भारी माइनिंग के हितों की रक्षा ही इस काउंटर इंसर्जेन्सी योजना का लक्ष्य

अमेरिका, यूरोप, जापान, आस्ट्रेलिया आदि साम्राज्यवादियों को मालामाल करने वाले इको टूरिज़्म (पर्यावरणीय पर्यटन), समुद्र के गर्भ में माइनिंग परियोजनाओं का निर्माण आदि से पर्यावरण और देश का मछली उद्योग गंभीर खतरे में पड़ रहे हैं। काली रेत, सोना, तांबा, सीसा, जिंक आदि खनिजों की खुदाई के लिए, तेल और गैस को निकालने के लिए तथा पर्यटन उद्योग के लिए मछवारों और किसानों को हजारों हेक्टेयर जमीन से बेदखल किया जा रहा है। पर्यावरण का विनाश करने वाली इन परियोजनाओं के खिलाफ जारी फिलिप्पींस के मछवारों के आंदोलनों को कुचलने के स्पष्ट लक्ष्य से अक्विनो सरकार काउंटर इंसर्जेन्सी योजना पर अमल कर रही है। इसके तहत गरीब मछवारे जन समुदायों में से, खासकर बैकोल रीजियन और पश्चिम मिंडानावो में निगरानी के लिए तथा खुफिया आपरेशन्स के लिए पैसा खर्च किया जा रहा है।

जहां अक्विनो सरकार और माइनिंग कम्पनियां देश की खनिज सम्पदा का दोहन करते हुए पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रही हैं, वहीं भारी माइनिंग का विरोध करने वाले अल्पसंख्यक लुमड राष्ट्रीयता के जन नेताओं व कार्यकर्ताओं पर फासीवादी सेना निरंतर हमले कर रही है। लुमड अल्पसंख्यक राष्ट्रीयता की जनता को बलपूर्वक विस्थापित किया जा रहा है। मानवाधिकारों की धज्जियां उड़ाते हुए अल्पसंख्यक लुमड लोगों को इस इलाके से मार भगाने के लिए 'न्यू इंडिजिनस पीपुल्स आर्मी फर रिफार्म' के नाम से विशेष रूप से एक हत्यारे अर्द्धसैनिक गिरोह को 'ओप्लान बयनिहान' के रूपशिल्पियों ने गठित किया। इस तरह सैकड़ों प्रति–क्रांतिकारियों को सशस्त्र बनाया गया। फलस्वरूप वहां पर बर्बरता का तांडव जारी है। किसानों, खासकर महिलाओं और बच्चों पर अत्याचार हो रहे हैं। हाल ही में माइनिंग विरोधी प्रदर्शनों पर सरकारी सशस्त्र एजेंटों ने हमला किया। भारी माइनिंग के खिलाफ हुए प्रदर्शनों पर सरकारी एजेंटों ने हमला किया। भारी मइनिंग का विरोध करने वाले 74 लुमड कार्यकर्ताओं को एनपीए के साथ सम्बन्ध होने के झूठे केस लगवाकर जेलों में बंद किया गया। उन्हें उनकी पुश्तैनी जमीनों से अलग कर बूढ़ों और बच्चों पर हमले किए जा रहे हैं। इसके खिलाफ संघर्षरत लुमड नेताओं को कत्ल किया जा रहा है। अक्टूबर

में अल्पसंख्यक लुमड रष्ट्रीयता के नेता कगयान डे ओरो की हत्या की गई और भारी माइनिंग विरोधी संगठन 'कलुंबे' (उत्तर मिंडानावो के लुमड संगठनों का क्षेत्रीय संयुक्त मोर्चा) का सहयोगी संगठन 'पनगलासग' के अध्यक्ष गिलबर्ट पबोरदा को मार डाला गया। प्राविन्शियल राजधानी में छह महीनों से ज्यादा समय से टिग्वाहनान कबीले के लुमड लोग आंदोलन कर रहे थे जिसे तोड़कर उन्हें तितर–बितर करने के लिए उनके बारियो कप्तान व आंदोलन के नेता जिम्मी लिगुयान को न्यू इंडिजिनस पीपुल्स आर्मी रिफार्म के अर्द्धसैनिकों ने कत्ल कर दिया। लुमड जनता यह मांग कर रही है कि इस हत्या पर जांच हो और उसे विरासत में मिली 52 हजार हैक्टेयर जमीनों को माइनिंग कम्पनियों व बागानों के हवाले न किया जाए। दूसरी ओर बेनिग्नो अक्विनो सरकार विदेशी पैसों से जारी बुनियादी सुविधाओं (सड़कों) के निर्माण के लिए हजारों शहरी गरीबों के आवासों को ढहा रही है। इसका विरोध करने पर गोलियों से भून डाला जा रहा है।

करगा रीजियन को सैन्य शिविर में बदलने और वहां के ममन्वा अल्पसंख्यकों पर जारी मानवाधिकारों के हनन के खिलाफ लड़ रहे 'कनलो' नामक एक संगठन के महासचिव जेनासक्यू एनरिक्विज, स्थानीय जन पार्टी के उपाध्यक्ष कट्रिबु और अन्य 36 लोगों पर झूठे केस लगाकर गिरफ्तार किया गया। इसके पहले 'मपसु' नामक एक संगठन के 37 नेताओं को हथियार व विस्फोटक पदार्थ रखने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। 'मपसु' सुरिगाओ डेल सर क्षेत्र के लियंगा, सान अगुस्टिन, मरिहाटाग और टागो में स्थित मनोबा लोगों की पुश्तैनी जमीनों को बड़ी माइनिंग कम्पनियों के हवाले करने का विरोध कर रहा है।

मानवाधिकारों को लेकर बेनिग्नो अक्विनो का ढोंग

एक ओर फिलिप्पीनो जनता पर फासीवादी दमन चलाते हुए ही दूसरी ओर एशियान (दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों का संगठन) द्वारा हाल ही में की गई मानवाधिकारों की घोषणा पर समर्थन जताकर बेनिग्नो अक्विनो ने मानवाधिकारों के मामले में भी अपने कपट को जाहिर किया। यह अंतर्राष्ट्रीय समाज को गुमराह करने के हथकण्डे के अलावा कुछ नहीं है। 20 नवम्बर 2012 को

कम्बोडिया में आयोजित एशियान के शिखर सम्मेलन में इस मानवाधिकार घोषणा को पारित किया गया। इससे एक माह पहले ही फिलिप्पींस की सरकारी सेना ने महिलाओं, गर्भवतियों और बच्चों का कत्लेआम किया। नवम्बर में एक बारियो अधिकारी का सिर कलम कर दिया। समर प्रांत में किसानों और रिजाल प्रांत में एक आदिवासी महिला का अपहरण किया। कम्पोस्टेला घाटी में अंधाधुंध गिरफ्तारियां कीं। दो शहरों में 28 नागरिकों की हिटलिस्ट तैयार की गई थी। कार्डिल्लेरा के मानवाधिकार संगठन ने इसे बाहर लाया। इस संगठन के अध्यक्ष का नाम भी हिटलिस्ट में शामिल था। इसी नवम्बर माह में सरकार ने क्रांतिकारियों के सिर पर इनाम बढ़ाकर आदेश जारी किए। मानवाधिकारों के उल्लंघन के कई और मामले सामने आए। हमेशा की तरह फिलिप्पींस की सेना सच्चाइयों पर परदा डालकर, सफेद झूठों की रट लगाते हुए अपने फासीवादी अपराधों और मानवाधिकारों के उल्लंघन की घटनाओं को दबाने की कोशिश कर रही है।

'ओप्लान बयनिहान' के अंतर्गत पिछले दो सालों में 114 लोगों की हत्या की गई। 127 लोगों की हत्या का प्रयास किया गया। दर्जनों लोगों को यातनाओं का शिकार बनाया गया। 12 लोगों को लापता कर दिया गया। शांति वार्ता के अंतर्गत फिलिप्पीनी सरकार और एनडीएफ के बीच सुरक्षा और प्रतिरक्षा गारंटी पर संयुक्त समझौता हुआ था। इसके मुताबिक एनडीएफ के सलाहकारों को गिरफ्तार नहीं करने का प्रावधान है। लेकिन सलाहकारों को लापता करने की घटनाओं पर आज तक कोई जांच नहीं हुई है।

गोबेल्स की तर्ज पर जारी है बेनिग्नो अक्विनो का प्रति–क्रांतिकारी प्रचार युद्ध

बेनिग्नो अक्विनो अपने ऊपर लगे तमाम आरोपों को 'कम्युनिस्ट प्रचार' कहकर खारिज कर रहा है। अपने ढोंगी प्रचार के लिए उसकी सरकार दसियों करोड़ पैसों को खर्च कर रही है। देश में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, कम वेतन, भूख, आवासहीनता, भूमिहीनता आदि सामाजिक व आर्थिक समस्याओं की तीव्रता को छुपाने के लिए वह और उसके सैन्य अधिकारी गलत आंकड़ों और सर्वेक्षणों को पेश कर रहे हैं। जो मीडियाकर्मी और बुद्धिजीवी उनकी ढोल नहीं बजाते उन्हें खुलेआम धमकियां दे रहे हैं। इस सबको देखने पर जनता को तानाशाह मार्कोस की याद ताजा हो रही है। मार्कोस ने सैन्य शासन के दौरान जब 70 हजार लोगों को जेलों में बंद किया था तब उसने झूठा प्रचार किया था कि उनमें राजनीतिक कैदी कोई भी नहीं है। बेनिग्नो अक्विनो के दो साल के

शासन में गिरफ्तार 385 राजनीतिक बंदियों में से 170 अभी भी जेल की चारदीवारी के अंदर कैद हैं। लेकिन बेनिग्नो इस पर झूठ बोल रहा है जोकि निंदनीय है।

'ओप्लान बयनिहान' में 'शांति' गई ठण्डे बस्ते में...

आज सरकार यह सोच रही है कि शांति वार्ता को पूरी तरह ठण्डे बस्ते में डाल दिया जाए। क्रांतिकारियों और आंदोलन के नेताओं को आम अपराधियों की तरह देखते हुए क्रूरतापूर्ण हमले कर रही है। वह यह धमकी दे रही है कि उसकी सरकार की तीसरी वर्षगांठ के पहले ही अगर क्रांतिकारी समर्पण नहीं करते हैं तो आगे शांति वार्ता नहीं होगी। दूसरी ओर, सरकार और उसके बुर्जुआई बुद्धिजीवी यह मानकर चल रहे हैं कि अगर इस बीच 'ओप्लान बयनिहान' सफल हो जाता है तो शांति वार्ता की जरूरत ही नहीं होगी। दरअसल अभी तक चली शांति वार्ता में संघर्ष विराम का समझौता कर लेने में कोई प्रगति हासिल नहीं हुई। ऐसी स्थिति दिखाई दे रही है कि सरकार क्रांतिकारियों से बिना शर्त समर्पण की मांग करते हुए, जेएएसआइजी की प्रतिरक्षा में मौजूद व्यक्तियों और 350 से ज्यादा राजनीतिक कैदियों को रिहा करने से इनकार करते हुए, बुनियादी सामाजिक व आर्थिक सुधारों का विरोध करते हुए और आवश्यक राजनीतिक व संवैधानिक सुधारों तथा ऐसे अन्य कदमों में अड़ंगा लगाते हुए किसी भी समय शांति वार्ता के नाटक पर परदा गिरा सकती है।

बेनिग्नो अक्विनो सरकार ने मोरो इस्लामिक लिबरेशन फ्रंट के साथ जो शांति वार्ता चलाई थी वह भी विफल हुई। अपने साथ किए गए समझौतों पर अमल न होता देख मोरो संघर्षकारियों ने आत्मनिर्णय के अपने अधिकार के लिए संघर्ष के पथ पर आगे बढ़ने का निश्चय किया है।

'ओप्लान बयनिहान' के खिलाफ सीपीपी की अगुवाई में एनपीए, एनडीएफ, अन्य जन संगठन, कई स्वतंत्र नागरिक संगठन और मानवाधिकार संगठन पिछले दो सालों से सशस्त्र व निहत्थे तथा भूमिगत व खुले तौर पर प्रतिरोधी संघर्ष चला रहे हैं। शांति व विकास की आड़ में सैन्य शिविर में बदले जाने का कड़ा विरोध कर रहे हैं। वे उस प्रति–क्रांतिकारी युद्ध को रोकने की मांग कर रहे हैं जो साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के हितों की रक्षा करता है। वे इस दृढ़ निश्चय के साथ काम कर रहे हैं कि जनता की राष्ट्रीय व सामाजिक मुक्ति की राह में बाधा डालते हुए सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन का दमन कर रहे प्रति–क्रांतिकारी युद्ध 'ओप्लान बयनिहान' को परास्त किया जाए।

ओप्लान बयनिहान का प्रतिरोध करते हुए उच्च लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता फिलिप्पींस का क्रांतिकारी आंदोलन

2011 से सीपीपी यह लक्ष्य तय करके काम कर रही है कि दीर्घकालीन जनयुद्ध का प्रारम्भिक चरण रणनीतिक रक्षा को पूरा कर रणनीतिक बराबरी वाले मंझले चरण में कदम रखा जाए। देश और दुनिया के हालात इसके लिए अनुकूल हैं। इसके लिए पार्टी ने सही लाइन तैयार की। अपने कैडरों व जनता का आह्वान किया कि राष्ट्रीय मुक्ति व जनवाद के लिए तथा जनता की आकांक्षाओं को साकार बनाने के लिए जनयुद्ध को संचालित करते हुए उसे उच्च चरण में विकसित किया जाए।

रणनीतिक बराबरी वाले चरण में पहुंचने के लिए पार्टी ने ठोस रूप से 5 साल का कार्यक्रम तय किया। यह स्पष्ट है कि इस क्रांतिकारी लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनयुद्ध को आगे बढ़ाना ही एक मात्र रास्ता है। वह अपने इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए राजनीतिक तौर पर निम्न कार्यभारों को पूरा करने की कोशिश कर रही है : पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक व सांगठनिक तौर पर तैयार किया जाए। पार्टी को चाहिए कि वह नई जनवादी क्रांति का नेतृत्व करते हुए जनयुद्ध को मौजूदा चरण से दूसरे चरण में विकसित करने की क्षमता बढ़ा ले। पार्टी, एनपीए, एनडीएफपी और तमाम अन्य क्रांतिकारी ताकतों को अपनी शक्ति व क्षमता को बढ़ाते हुए महान कार्यभारों को पूरा करना चाहिए और महान कामयाबियां हासिल करनी चाहिए। आगामी पांच सालों में पार्टी सदस्यता को ढाई लाख तक बढ़ाना चाहिए जोकि वर्तमान में दसियों हजारों में है। इस टार्गेट को पूरा करने के लिए शहरों व ग्रामीण इलाकों में जन आंदोलन को विकसित करना चाहिए। पार्टी सदस्यता प्राप्त मजदूरों और पढ़े–लिखे नौजवानों को जितना ज्यादा हो सके

जनसेना में, जन कार्य में, पार्टी शाखाओं में, जन संगठनों के सांगठनिक कार्य में तथा ग्रामीण इलाकों में राजसत्ता के अंगों के निर्माण कार्य में भेजना चाहिए। जनता को नई जनवादी क्रांति की राजनीति से जागरूक बनाना चाहिए। शोषणकारी शासन के प्रति जनता में मौजूद गुस्से को संगठित क्रांतिकारी शक्ति में बदलना चाहिए। उसका सही इस्तेमाल करना चाहिए। देशभक्तिपूर्ण व प्रगतिशील जन संगठनों का विस्तार करना चाहिए। उन्हें जुझारू संगठनों के तौर पर प्रशिक्षित करना चाहिए। जनता के जीवन को प्रभावित करने वाली तीव्र समस्याओं को उठाकर जनता का जुझारूपन बढ़ाने के लिए तथा शोषक सरकार पर दबाव बढ़ाने के लिए शहरी जन आंदोलन को शक्तिशाली बनाते हुए आगे बढ़ाना चाहिए। यहां पर आंदोलन को विकसित करने के लिए अनुकूल परिस्थिति में कोई कमी नहीं है। अचानक बढ़ रही तेल की कीमतें व रोजमर्रा की चीजों की कीमतें, ग्रामीण इलाकों की गरीबी व बेरोजगारी का बढ़ना, जोतने के लिए जमीन और रहने के लिए आवासों की कमी, फैल रही बीमारियां, कल्याणकारी सेवाओं में भारी कटौती आदि तमाम समस्याएं जनता को झकझोर रही हैं। इनके खिलाफ जनता को जागृत करते हुए उसे राजनीतिक संघर्षों में गोलबंद करना चाहिए। चूंकि शहरों में जन आंदोलन अभी भी कानूनी तौर पर आत्मरक्षा करते हुए जारी हैं, इसलिए उनका लक्ष्य यह होना चाहिए कि व्यापक जन समुदायों को संघर्षों में उतारा जाए, न कि छोटी, पृथक व भड़काऊ कार्रवाइयों पर उतारू हो जाए। फिलिप्पीनी जनता को संघर्ष का अपार अनुभव है। बेनिग्नो अक्विनो सरकार अगर जन प्रदर्शनों पर हमला करती है और उनका दमन करने की कोशिश करती है तो, जैसा कि फिलिप्पींस के इतिहास में हुआ था और आज विभिन्न देशों में हो रहा है, जनता बड़े पैमाने पर विद्रोह करेगी। शहरों में अगर मजबूत कानूनी जनवादी आंदोलन

नहीं होगा तो दुश्मन अपने बलों को बड़े पैमाने पर जनता व क्रांतिकारी बलों के खिलाफ गुरिल्ला फ्रंटों में तैनात करेगा।

नई जनसेना पार्टी के प्रधान सांगठनिक रूप की तरह काम करेगी जो जनता को जागृत करने, गोलबंद करने और संगठित करने का काम करती है। उसे जन कार्य को सुचारू रूप से चलाना चाहिए। राजसत्ता के अंगों, जन संगठनों, स्थानीय मिलिशिया तथा जन संगठनों में आत्मरक्षा यूनिटों की स्थापना करनी चाहिए। हालांकि जनता को संगठित करने की जिम्मेदारी धीरे–धीरे पार्टी शाखाओं और जन संगठनों को सौम्प देना चाहिए। इस तरह जनसेना की यूनिटें तय अवधि में राजनीतिक–सैनिक प्रशिक्षण और कम्बैट कार्यभारों पर ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम होंगी।

निरंतर व्यापक व गहरा होने वाले जनाधार पर निर्भर होकर गुरिल्ला युद्ध को तीव्र व व्यापक तौर पर संचालित करना जनसेना की लाइन होनी चाहिए। प्रत्येक एनपीए यूनिट को चाहिए कि वह ठोस समयावधियों में कम्बैट ड्यूटी, जन कार्य और उत्पादन के क्रियाकलापों में भाग ले। जब कम्बैट ड्यूटी होगी तब एनपीए यूनिटों को चाहिए कि वे दुश्मन की यूनिटों का सफाया करने के लिए मौके पैदा कर लेने चाहिए या फिर खोज लेने चाहिए। हथियारों को जब्त करने के लिए एनपीए यूनिटों को कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण की कार्रवाइयां लगातार चलानी चाहिए। एनपीए के लड़ाकों की मौजूदा चंद हजार संख्या को कई हजारों में बढ़ा लेना चाहिए। उसे 25 हजार रायफलें जुटा लेने का लक्ष्य होना चाहिए ताकि वह जनयुद्ध को रणनीतिक बराबरी की स्थिति में विकसित कर सके।

रणनीतिक रक्षा से रणनीतिक बराबरी की स्थिति में एक या दो पंचवर्षीय योजनाओं के दरमियान विकसित हो सके, इसके लिए एनपीए को चाहिए कि वह अपनी लड़ाकू क्षमता को उच्च स्तर पर बढ़ा ले। कार्यनीतिक प्रत्याक्रमणों को तेज करना चाहिए। तुरत–फुरत परिणाम देने वाली लड़ाइयां लड़नी चाहिए। ऐसी निर्णायक लड़ाइयों से बचना चाहिए जिससे कि किसी प्लाटून या कम्पनी के अस्तित्व को खतरा हो। सिर्फ ऐसी लड़ाइयां लड़नी चाहिए जिसमें जीत की गारंटी हो। केन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण और बलों की तैनाती में फेरबदल की कार्यनीति का इस्तेमाल करने में लचीला होना चाहिए। दुश्मन को धोखा देने और जन कार्य का संचालन करने के लिए एनपीए बलों का विकेन्द्रीकरण करना चाहिए। दुश्मन के बलों की अधिकता से हमला करने का मौका न मिले, इसके

लिए अनुकूल समय या अनुकूल स्थान प्राप्त करने के लिए बलों को एक जगह से दूसरी जगह में रवाना करना चाहिए। मौजूदा 110 गुरिल्ला फ्रंटों को विकसित करते हुए सभी को या ज्यादातर को कम्पनी फ्रंट में विकसित करते हुए नए गुरिल्ला फ्रंटों क निर्माण करना चाहिए। आगामी पांच सालों में गुरिल्ला फ्रंटों की संख्या कम से कम 180 तक बढ़नी चाहिए। अगल–बगल में मौजूद गुरिल्ला फ्रंटों को संयुक्त रूप से कार्रवाइयों का संचालन करना चाहिए ताकि व्यापक रणक्षेत्र निर्मित हो सके। इस तरह विशाल कमान, समन्वय, आपसी सहयोग और रणकौशल हासिल करना चाहिए। यह आक्रमण और आत्मरक्षा के लिए, गुरिल्ला युद्ध को तेजी से विकसित करने के लिए, प्रांतीय बलों से स्थानीय गुरिल्ला बलों व जन मिलिशिया तक पूर्ण स्तर पर एनपीए बलों की व्यवस्था निर्मित करने में और बेहतर अवसर प्रदान करेगा।

आगामी पांच सालों में सभी ग्रामीण जिलों में आंदोलन का विस्तार करना चाहिए। सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन को कृषि क्रांति और क्रांतिकारी आधार इलाकों के निर्माण के साथ सम्मिलित करना चाहिए। किसान अपनी जमीन की समस्या को न्यूनतम और अधिकतम भूमि सुधार कार्यक्रमों के जरिए हल करके ही जनयुद्ध में शामिल होंगे और उसमें सहयोग करेंगे।

संयुक्त मोर्चे के प्रयासों के जरिए दोस्ताना बलों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एकजुट करने से पार्टी और एनपीए का और भी विकास और विस्तार हो सकता है। लेकिन संयुक्त मोर्चे के कार्य में पार्टी को अपनी स्वतंत्रता और पहलकदमी को बनाए रखना चाहिए। जन आंदोलन को क्रांतिकारी पथ से हटाने के लिए प्रतिक्रियावादियों के द्वारा किए जाने वाले प्रयासों के प्रति सतर्क रहना चाहिए। मजदूर–किसानों की एकता की नींव पर जन आंदोलन को मजबूत बनाना चाहिए। इन बुनियादी वर्गों के साथ शहरी निम्न पूंजीपति वर्ग को एकताबद्ध करते हुए प्रगतिशील ताकतों के गठबंधन का निर्माण करना चाहिए। बाद में, इन प्रगतिशील शक्तियों से राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग को मिलाते हुए देशभक्तिपूर्ण गठबंधन का गठन करना चाहिए।

सीपीपी लम्बे अरसे से मोरो जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार का सम्मान करती आ रही है। उसका समर्थन कर रही है। दोनों आंदोलन एक दूसरे का सहयोग कर रहे हैं। अमेरिकी साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी मनीला सरकार के खिलाफ सीपीपी उनके साथ संयुक्त मोर्चा चला रही है।

ओप्लान बयनिहान के खिलाफ देश भर में तीव्रतर होता जन प्रतिरोध और एनपीए द्वारा कार्यनीतिक जवाबी आक्रमण

मौजूदा संकटपूर्ण परिस्थिति में बेनिग्नो सरकार का चरित्र जन विरोधी, राष्ट्र विरोधी, जनवाद विरोधी, भ्रष्ट और क्रूर के रूप में जितनी तेजी से उजागर हो रहा है उतनी ही तेजी से क्रांतिकारी आंदोलन की शक्ति बढ़ रही है। तेल, खाद्य पदार्थों और अन्य रोजमर्रा की चीजों की आसमान छूती कीमतों से आने वाले राजनीतिक तूफान के संकेत दे रही हैं। भ्रष्टाचार की समस्या बेनिग्नो अक्विनो सरकार के लिए एक और फंदा बनने वाली है। भ्रष्टाचार और मानवाधिकारों के हनन के मामलों में पूर्व राष्ट्रपति अर्रोयो पर मुकदमा चलाकर उसे जेल में डालने में बेनिग्नो अक्विनो की नाकामी की हर तरफ निंदा हो रही है। एडवार्डो को–ज्वांको, लुसियो टान जैसे रईसों के आर्थिक अपराधों को और 2010 में बेनिग्नो अक्विनो सरकार के चुनावी प्रचार में धनराशि उपलब्ध करवाने वाले अन्य घोटालेबाजों को सरकार ने या तो नजरअंदाज कर दिया या फिर उनका पक्ष लिया। जनता इस पर सरकार की तीखी आलोचना कर रही है। बेनिग्नो अक्विनो और उसके गिरोह का पूरी तरह पर्दाफाश होने में ज्यादा देर नहीं लगने वाली है। हाल में कई घोटाले उजागर हुए थे जिससे बेनिग्नो अक्विनो के चेहरे पर से भ्रष्टाचार–विरोधिता का नकाब तेजी से हटता जा रहा है।

एनपीए देश भर में सैकड़ों की संख्या में छोटी, मध्यम और बड़ी किस्म की कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण–कार्रवाइयों को अंजाम देकर बेनिग्नो अक्विनो सरकार की नींदें उड़ा रही है। उसके द्वारा बड़े पैमाने पर की जा रही हैरान–परेशान करने वाली छिटफुट कार्रवाइयों ने भी सरकारी सेना के नाक में दम करके रखा है। लाखों जनता की सक्रिय भागीदारी के साथ यह वीरतापूर्ण प्रतिरोध दिन–ब–दिन व्यापक जनयुद्ध का रूप धारण कर रहा है।

चूंकि फिलिप्पींस की सेना बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, बड़े दलाल पूंजीपतियों और जमींदारों के हाथों में देश की जनता का दमन करने का साधन बनी है, इसलिए सैन्यीकरण विरोधी आंदोलन साम्राज्यवाद–विरोधी व सामंतवाद–विरोधी संघर्ष का अभिन्न हिस्सा बन गया। मानवाधिकारों की रक्षा, कृषि सुधारों, जनवादी आंदोलन को आगे बढ़ाने और राष्ट्रीयताओं के आत्मनिर्णय के अधिकार

के लिए जनता अपने आंदोलनों को तेज कर रही है। हाल में सुरिगावो और बटुवान में भारी माइनिंग कम्पनियों तथा सुमिटामो बागान पर एनपीए द्वारा किए गए सफल हमलों ने देश भर में जनता और क्रांतिकारी ताकतों को प्रेरणा दी।

फैक्टरियों में मजदूर, शहरी गरीब, ग्रामीण जनता और स्कूली छात्र सड़कों पर आकर आंदोलन कर रहे हैं। मजदूर पूंजीवादी शोषण और राजकीय दमन का हड़ताल और अन्य रूपों में प्रतिरोध कर रहे हैं। किसान जमीन कब्जा, विरोध प्रदर्शन, बड़े पैमाने पर आवेदन पत्रों का समर्पण, नुक्कड़ संघर्ष आदि के अलावा सशस्त्र कार्रवाइयों में भाग ले रहे हैं। सामंती व अर्द्ध–सामंती शोषण, जमीन कब्जा और फासीवादी अत्याचारों का प्रतिरोध कर रहे हैं।

बेनिग्नो अक्विनो सरकार के अत्याचारों का शहरी गरीब जनता प्रतिरोध कर रही है। क्वेजान शहर में '26 सितम्बर आंदोलन', जोकि शहरी गरीबों का संयुक्त मोर्चा है, जनता का नेतृत्व कर रहा है। कडमे की अध्यक्ष जोसी लेपेज जैसे नेताओं को गिरफ्तार करने आए पुलिस बलों का जनता ने प्रतिरोध कर मार भगा दिया। क्वेजान शहर में जिला व्यापार केन्द्र के निर्माण के लिए सरकार ने गरीबों की कोलनियों को जमींदोज करने की कोशिश की तो जनता ने इसके खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया। इससे सरकार को अस्थाई तौर पर यह कार्यक्रम रोकने का आदेश जारी करने पर मजबूर होना पड़ा। बस्तियों को खाली करवाने तथा विभिन्न जनविरोधी निर्माणों के लिए शहरी गरीबों को दूर–दराज के इलाकों में भेजने की कोशिशों का विरोध करते हुए जनता शहरों में बैरिकेड बनाकर पुलिस बलों का मुकाबला कर रही है।

इस तरह फिलिप्पीनी जनता शहरों, गांवों, फैक्टरियों, गंदी बस्तियों, विद्यालयों और दफ्तरों में जुझारू रूप से और सशस्त्र होकर लड़ रही है जिससे विश्व शोषित जनता उत्साहित व प्रेरित हो रही है।

'ओप्लान बयनिहान' का विरोध करो!

फिलिप्पींस के क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थन में भारत भर में भाईचारापूर्ण आंदोलन का निर्माण करो!

अमेरिकी साम्राज्यवादियों, बड़े दलाल पूंजीपतियों और बड़े जमींदारों के वर्गीय हितों की रक्षा में चलाए जा रहे प्रति–क्रांतिकारी 'ओप्लान बयनिहान' का विरोध करें जिसके तहत हत्या, अत्याचार, गिरफ्तारी, यातना, बेदखली आदि के जरिए आतंक का तांडव मचाया जा रहा है। फिलिप्पींस में मौजूद तमाम अमेरिकी

सैन्य अड्डों को हटाने की मांग करें। अमेरिकी समर्थन से दलाल बेनिग्नो अक्विनो सरकार द्वारा जनता पर जारी इस युद्ध को तत्काल बंद करने की मांग करें। जनता पर सेना, पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों के हमलों को तत्काल बंद करने तथा उन्हें आंदोलन के इलाकों से वापस भेजने की मांग करें। फिलिप्पींस के जेलों में मौजूद तमाम कैदियों को तत्काल व बिना शर्त रिहा करने की मांग करें। देश को साम्राज्यवाद, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों व बहुराष्ट्रीय कार्पोरेट कम्पनियों के हवाले कर रहे बेनिग्नो अक्विनो के फासीवादी शासन के खिलाफ वीरतापूर्वक जारी फिलिप्पीनी क्रांति का समर्थन करें। फिलिप्पींस में जारी चौतरफा दमन का सभा, सम्मेलन, पोस्टर, पर्चे, सेमिनार, नुक्कड़ मीटिंग, ग्रुप मीटिंग आदि के जरिए व्यापक जनता के बीच पर्दाफाश करें। फिलिप्पीनी जनता का इतिहास और विश्व के क्रांतिकारी आंदोलनों का इतिहास यह ऐलान कर रहे हैं कि 'ओप्लान बयनिहान' चाहे जितना भी बर्बर क्यों न हो, उसकी पराजय निश्चित है। साम्राज्यवादी और प्रतिक्रियावादी आखिरकार पराजित ही होंगे। जनता ही विजेता होगी।

फिलिप्पींस की क्रांतिकारी जनता,

भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में आगे बढ़ते क्रांतिकारी आंदोलन की ओर से समूची क्रांतिकारी जनता आपके प्रति मजबूत समर्थन व क्रांतिकारी भाईचारा प्रकट कर रही है। भारत और फिलिप्पींस के क्रांतिकारी आंदोलन आपसी सहयोग व समर्थन करते हुए, असाधारण कुरबानियों के साथ अपने निर्देशित लक्ष्यों की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। विश्व समाजवादी क्रांति के एक हिस्से के रूप में भारत में हमारी पार्टी – भाकपा (माओवादी) नई जनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए किसी भी कुरबानी से न डरते हुए दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ेगी। फिलिप्पींस के क्रांतिकारी आंदोलन के साथ जंगे मैदान में एक मजबूत सह–लड़ाकू के रूप में खड़े होकर फिलिप्पींस की नई जनवादी क्रांति को सफल बनाने में हम सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयवाद के साथ अपने हिस्से की भूमिका निभाएंगे। यह हमारा वादा है। फिलिप्पीनी जनता अपराजेय है। विश्व शोषित जनता आपके साथ है। आगे बढ़ें!

- ✶ फिलिप्पींस की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीपी) जिंदाबाद!
- ✶ नई जन सेना (एनपीए) जिंदाबाद!
- ✶ राष्ट्रीय जनवादी मोर्चा (एनडीएफ) जिंदाबाद!
- ✶ ओप्लान बयनिहान मुर्दाबाद!
- ✶ फिलिप्पींस नई जनवादी क्रांति जिंदाबाद!
- ✶ मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद जिंदाबाद!
- ✶ साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!
- ✶ विश्व समाजवादी क्रांति जिंदाबाद!
- ✶ सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयवाद जिंदाबाद!